www.thearyasamaj.org

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-मार्गशीर्ष-पौष, संवत् 2073
दिसम्बर 2016

ओ३म्

अंक 136, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

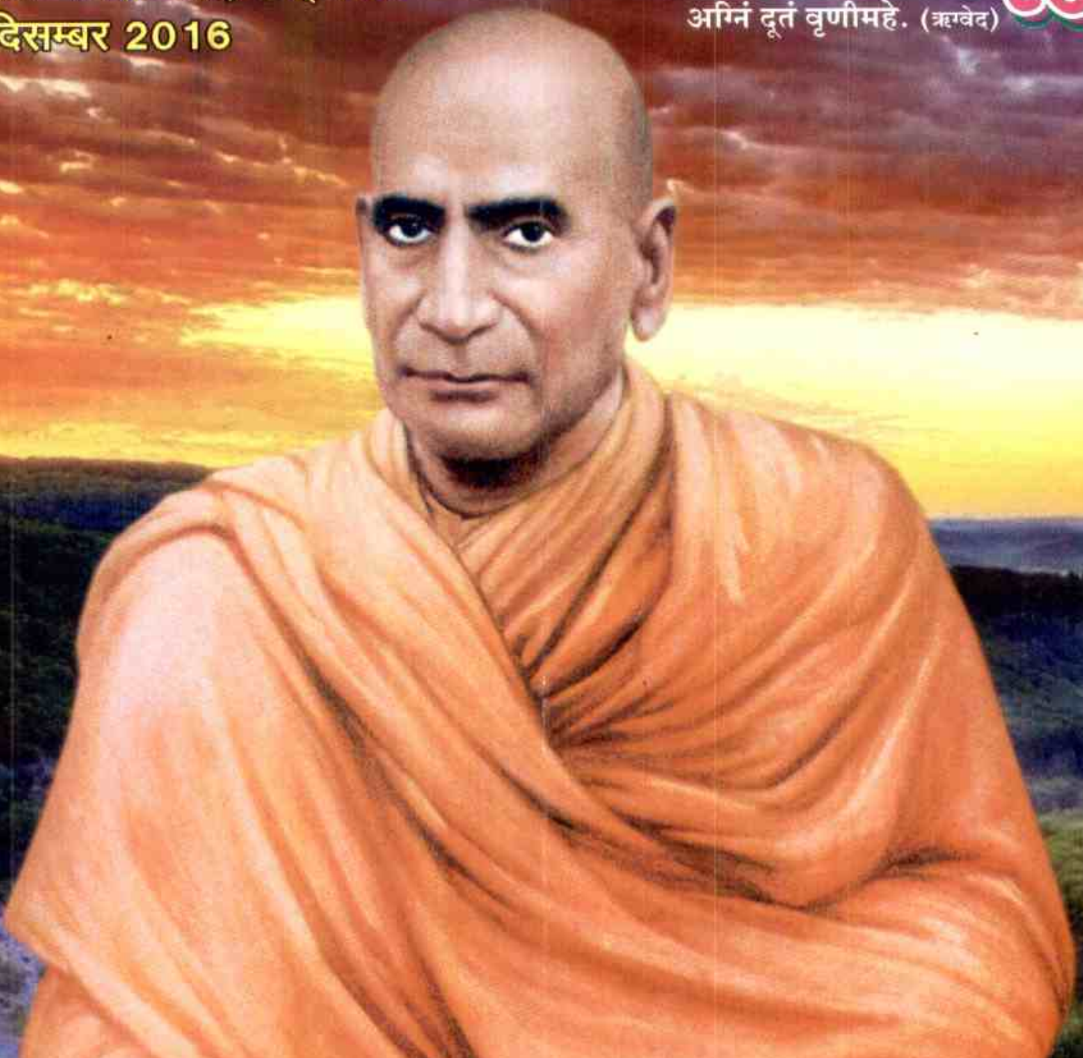

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

किसी अनागत की प्रतीक्षा में बैठना
मुँह ढांक कर सोने से अच्छा है ।
कल्पना करना, लक्ष्य की ओर बढ़ना
जीवन को बेकार खोने से अच्छा है ।।

आर्यसमाज बाल्कोनगर कोरबा में दि. 21 अक्टूबर 16 से 23 अक्टूबर 16 तक सम्पन्न वार्षिकोत्सव की झलकियाँ

गत दिनों आर्यसमाज डिफेंस कालोनी नई दिल्ली के सभागार में माता सत्यप्रियायति को ठाकुर विक्रमसिंह ट्रस्ट द्वारा सम्मानित किया गया।

www.thearyasamaj.org

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् – २०७३
सृष्टि संवत् – १,९६,०८,५३,११८
दयानन्दाब्द – १९३

वर्ष – १२, अंक ६ | ओ३म् | मास/सन् – दिसम्बर – २०१६

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्जसज्जकम्,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय – सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वसिष्ठों की महिमा	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	आखिर कैसे हो संसार सुखी ?	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का काले धन धन पर प्रहार और हमारा देश	मनमोहन कुमार आर्य	०८
४.	ईश्वर का दयालु स्वरुप : कर्म फल	डॉ. अशोक कुमार आर्य	१०
५.	यह नाराजगी किस पर और क्यों ?	श्री ओमप्रकाश बजाज	१२
६.	पुण्य स्मरण : ऐसे थे स्वामी श्रद्धानन्द	श्रीमती सुकान्ति	१३
७.	स्वर्णिम स्मृति : स्वामी श्रद्धानन्द और गुरुकुल को जन्म देने वाली परिस्थितियाँ	डॉ. ईश्वर भारद्वाज	१५
८.	जीने की कला	श्री कन्हैयालाल आर्य	१८
९.	अग्निहोत्र आदि हमारे लिए दूसरा कर सकता है ?	स्वामी मुक्तानन्द परिव्राजक	२१
१०.	आजीवन आचरणीय चार श्रेष्ठ कर्म	मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति	२४
११.	कैसा हो व्यवहार हमारा	श्री नरेन्द्र आहुजा	२६
१२.	अनन्त कोटि सृष्टि का प्रलय एक साथ होता है या अलग–अलग	ओमप्रकाश आर्य	२८
१३.	पाती परदेश की : नेपाल यात्रा	आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः	२९
१४.	होमियोपैथी से सर्दी नजला (साइनस) का उपचार	डॉ. विद्याकांत त्रिवेदी	३१
१५.	समाचार दर्पण		३२

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८–४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई–मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

वार्षिक शुल्क – १००/– दसवर्षीय–८००/

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

www.thearyasamaj.org

वेद वेदामृत

वसिष्ठों की महिमा

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

वेद वेदामृत

सूर्यस्येव वक्षयो ज्योतिरेषां, समुद्रस्येव महिमा गभीरः।
वातस्येव प्रजवो नान्येन, स्तोमो वसिष्ठा अन्वेतवे वः॥ ऋग्. ७.३३.८

ऋषिः **मैत्रावरुणिः वसिष्ठः**। देवता **वसिष्ठपुत्राः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(वसिष्ठाः)** हे सद्विद्या एवं सद्गुणकर्मों में अतिशय निवास करने वाले आप्त विद्वानों! **(सूर्यस्य)** सूर्य के **(वक्षयः इव)** वक्षस्थल-रुप आदित्यमण्डल के समान **(एषां)** इन (तुम लोगों) की **(ज्योतिः)** ज्योति (है), **(समुद्रस्य इव)** समुद्र के समान **(गभीरः)** गम्भीर **(महिमा)** महिमा (है), **(वः)** तुम्हारा **(स्तोमः)** स्तोत्र, प्रशंसा-गीत **(वातस्य)** वायु के **(प्रजवः इव)** प्रकृष्ट वेग के समान **(अन्येन)** अन्य के द्वारा **(अन्वेतवे)** अनुसरण करने योग्य **(न)** नहीं (है)।

क्या तुमने वसिष्ठ और वसिष्ठपुत्रों को देखा है ? ऐतिहासिक वसिष्ठ ऋषि और उनके पुत्रों की बात मैं नहीं कर रहा। मैं उनके विषय में पूछ रहा हूँ जो गुणों से वसिष्ठ या वसिष्ठ-पुत्र है। यौगिक दृष्टि से वसिष्ठ वे कहलाते हैं, जो सबसे अधिक विद्या, सद्गुणों और सत्कर्मों के अन्दर निवास करते हैं, उनमें रम जाते हैं। उनकी विद्या विवाद के लिए नहीं, अपितु सद्गुणों को लाने के लिए होती है और सद्गुण प्रदर्शन-मात्र के लिए नहीं अपितु सत्कर्मों को लाने के लिए होते हैं। ऐसे अतिशय विद्वान्, गुणवान् और सत्कर्मनिष्ठ जन वसिष्ठ नाम से स्मरण किये जाते हैं और उनके अनुरुप-पुत्र भी वसिष्ठ संज्ञा को ही पाते हैं। सुनो, ऐसे वसिष्ठों में क्या-क्या शक्तियाँ आकर निहित हो जाती है, यह वेद बता रहा है।

आदित्य-मण्डल के समान इनमें ज्योति विराजमान होती है। इनका मुख तेजस्वी होता है, और उसमें से इनका आत्मतेज भी झांक रहा होता है। कोई भी पाप-विचार या पापी इनकी ज्योति के सम्मुख ठहर नहीं सकता। इसके विपरीत जो भी इनके सम्पर्क में आता है, वह इनकी ज्योति से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता, जैसे सूर्य के सम्पर्क में आने वाला पदार्थ उसकी द्युति से विद्योतित होता ही है। इन वसिष्ठों की महिमा समुद्र के समान गंभीर होती है। समुद्र का जल अगाध होता है, उसकी लहरें भी गंभीर होती है। जहाँ देखो, जल-ही-जल दिखाई देता है और वह रत्नों का आकर भी कहलाता है। ऐसे ही वसिष्ठों का हृदय भी धीरता एवं गंभीरता का पारावार तथा उज्ज्वल गुणगण-रुप रत्नों का रत्नाकार होता है। इन वसिष्ठों के जो स्तुति-कीर्तन होते हैं, जन-जन के मुख से जो उनके प्रशंसा गीत गाये जाते हैं, वे अन्य जनों को प्राप्त नहीं होते, जैसे वायु के वेग को कोई प्राप्त नहीं कर पाता। अन्य जन इन प्रशंसा-गीतों के पात्र तभी बनते हैं, जब वे भी वसिष्ठ बन जाते हैं।

हे वसिष्ठों! अपनी इस महिमा को पहचानो और हमारे लिए आदर्श बनकर अपनी विद्वत्ता की तरंगें सर्वत्र उठाते रहो, अपने सद्गुणों का सौरभ सर्वत्र फैलाते रहो, अपनी ज्योति की किरणें सर्वत्र प्रसृत करते रहो। हमें भी वसिष्ठपुत्र कहलाने का अधिकारी बना दो।

संस्कृतार्थ :- १. अतिशयेन विद्यावासाः (द भा), अतिशयेन सद्गुणकर्मसु निवासिनः (द भा ऋग्. ७.३७.४), २. अनु इण् गतौ, तुमर्थ में तवेन्।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

आखिर कैसे हो संसार सुखी ?

आज हर क्षेत्र में वैश्विक परिस्थितियाँ तेजी से बदलती जा रही है। जीवन मूल्य निर्धारित होते जा रहे हैं। वैज्ञानिक प्रगति अपनी चरम-सीमा लांघती जा रही है। भौतिक उन्नति के संसाधन दिन-रात जुटाए जा रहे हैं। जिसको जहाँ से भी बन पड़े अधिक से अधिक प्राप्ति के प्रयास निरन्तर बढ़ती की ओर दिखाई दे रहे हैं। दिन-रात इसी प्रयत्न में लगे हैं कि संसार में शान्ति स्थापित हो जाए संसार सुखी बन जाए दुःख और असन्तोष की मात्रा कम हो जाय, उजड़े हुए लोग, उखड़े हुए लोग फिर से बस जाएँ, उपद्रव सब धर्म मजहब जातिवाद, प्रान्तवाद, नक्सलवाद के सारे झगड़े मिट जाएँ और चारो ओर अमन चैन की बंशी बजे। किन्तु ऐसा हो नहीं पा रहा है कारण हम समस्या के वास्तविक समाधान की ओर बढ़ ही नहीं पा रहे हैं, जिससे दुःख घटने के बजाय और उग्र रुप से हम उसमें धंसते चले जा रहे हैं।

आप सभी जानते हैं कि आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने "वेदों की ओर लौटो" का नारा दिया था, क्योंकि उन्होंने दुनियाँ के सभी धर्मों के ग्रन्थों को विचारपूर्वक पढ़ने के बाद यही निष्कर्ष निकाला कि मानवीय समस्याओं का सम्पूर्ण समाधान अगर इस धरती में किसी के पास है तो वह सिर्फ वेद है क्योंकि वेद ज्ञान सार्वभौमिक और सार्वकालिक है उसमें किसी वर्ग विशेष के लिए कोई भी बात नहीं कही गई है उसमें पूरे संसार वासी सभी जीवधारियों के सुख एवं कल्याण की चर्चा की गई है। यह सब कहने की जरुरत नहीं रह गई है कि वर्ल्ड लाईब्रेरी की पहली बुक ऋग्वेद है और यही वेद हमारी संस्कृति की अमूल्य निधि है। चारों

www.thearyasamaj.org

वेदों के सभी मन्त्र मनुष्य के भौतिक व आध्यात्मिक अभ्युदय देते हैं, मनुष्य को क्या करना है क्या नहीं करना है। ये सभी बातें वेदों में मिलती है। इंसान का चरम लक्ष्य मुक्ति व शान्ति प्राप्त करना है। वेद के मार्ग पर चलकर ही यह सम्भव है।

अतः देखने की आवश्यकता है कि वेद में जीवन उपयोगी ऐसे कौन से मूल्य हैं जो व्यक्ति के उत्थान व विकास के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसा कोई विषय नहीं है जिसके बारे में वेदों में उल्लेख नहीं है जीवन के हर पक्ष पर वैदिक मन्त्रों में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। जिनसे मनुष्य अच्छा जीवन जीने की कला सीखता है तथा संरार को सुखी बनाया जा सकता है। इन भौतिक मूल्यों को किसी देश विशेष अथवा काल की परिधि में नहीं बांधा जा सकता, वे सार्वभौमिक व सार्वकालिक है उनका किसी भी धर्म समुदाय से कोई लेना देना नहीं है। वे शाश्वत मानवीय मूल्य हैं जो सृष्टि के आदि से चले आए हैं। कुछ नास्तिक लोग कहते हैं कि वेद तो गड़रियों के गीत हैं उसमें कहाँ नैतिक मूल्यों का स्थान है। जबकि यह कथन सत्य से कोसों दूर है, जितने नैतिक व आध्यात्मिक परक वेद है उतना संसार का कोई ग्रन्थ नहीं। वेद में अनेक उदात्त भावनाएँ हैं वेद के एक-एक मंत्र में वह शक्ति है जिसके अनुशीलन व पालन से पूरा संसार सुखी बन सकता है। महान वैज्ञानिक सर आइंस्टिन से उनके जीवन के अन्तिम समय पर किसी पत्रकार ने पूछा था- संसार को सुखी बनाने के लिए किस वैज्ञानिक आविष्कार की आवश्यकता है। आइंस्टिन ने कहा - संसार को सुखी बनाने के लिए सिर्फ अच्छे इंसान का होना आवश्यक है। क्योंकि अच्छे इंसान में ही सद्विचार उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिए वेद का मानव समाज के लिए सबसे पहला उद्घोष है कि जीवन में इतने ऊँचे उठो कि जितना आकाश में सूर्य है तथा ऋषि मुनियों के पदचिन्हों पर चलकर मननशील व अच्छे इंसान बनो। ऋग्वेद के एक मन्त्र में कहा गया कि सद्गुणों से ही श्रेष्ठ इंसान बन सकता है वेद मनुष्य की पवित्रता में विश्वास रखते हैं। सदाचार तप, दान और परोपकार उनके आधार स्तंभ है। वेद केवल सिद्धान्त में विश्वास नहीं रखते अपितु व्यवहार में भी विश्वास रखते हैं, इसलिए कहा है - "**आचार हीनं न पुनन्ति वेदाः**" अर्थात् जो आचरण से हीन हैं वे वेद पढ़कर भी पवित्र नहीं हो सकते। मन, वचन, कर्म की पवित्रता होना सबसे प्रथम आयाम है। वेदों में बार बार पाप-पुण्य की बात दोहराई गई है। वेदों को मानने वाला ऐसा जीवन जीना चाहता है जिसमें कोई बुराई न हो, अच्छाई ही अच्छाई हो।

इसलिए वेद का एक मन्त्र कहता है -

"**विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव।**"

अर्थात् हे ईश्वर जितनी भी हमारे अन्दर बुराईयाँ हैं वे हमसे दूर कीजिए और जो

अच्छाईयाँ है वे हमें प्रदान कीजिए। यह तभी संभव है जब इंसान गलत कार्य न करे किसी का बुरा न सोचें और दूसरों से ऐसा व्यवहार करें जैसा वह चाहता है कि दूसरे उसके साथ करें। वेद उपदेश देता है हम जीवन में गलत मार्ग पर न चलें, रोज कल्याणकारी कार्य करें, हवन करें तथा जरूरतमंद की मदद करें। वेद व्यक्तिगत उन्नति की बात नहीं करता वह सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझने की प्रेरणा देता है। इसलिए वेद में कहा है - **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** - समस्त संसार को आर्य बनाओ, सबके कल्याण की बात कही गई है। "**सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।**" समाज मनुष्यों से बनता है, यदि समाज में सब ठीक हो, सज्जन हों तो समाज में सुख-शांति बनी रहती है। इसलिए वेद सबकी तरक्की चाहता है वह सभी में एक परमात्मा को देखता है , सबको समान मानता है, वेद कहता है - हम सब मिलकर रहें मिलकर चलें, सब एक तरह से सोचें किसी भी किसी तरह का मतभेद न हो- "**संगच्छध्वं संवदध्वं, संवो मनांसि जानताम्।**" वेद में स्वतन्त्रता समता एवं भ्रातृत्व का उद्घोष किया गया है अच्छे प्रजातन्त्र के लिए ये तीन मूल सिद्धान्त है, हमारे संविधान में भी इन तीनों पर जोर दिया गया है। वेद में कहा है जिस प्रकार हमारे शरीर के सारे अंग मिलकर शरीर को चलाते हैं उ,सी प्रकार समाज के सभी घटकों के तालमेल से समरसता से समाज को सुखी बनाया जा सकता है, उनमें कोई छोटा बड़ा नहीं होता। ऋग्वेद में एक जगह लिखा है - **जो केवल अपना पेट भरता है और उसका पड़ोसी भूखा है ऐसा व्यक्ति पापी है। समाजवाद का इससे बड़ा उदाहरण कोई नहीं दे सकता।** एक वेद मंत्र में -

"**अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमना। जाया पत्ये मधुमती वाचं वदतु शान्तिवाम्॥**"

अर्थात् पुत्र को पिता का अनुव्रती होना चाहिए तथा माँ के समान मनवाला होना चाहिए। पति-पत्नी दोनों का एक दूसरे के साथ मुधर वाणी का प्रयोग करना चाहि। कितना स्वर्णिम उपदेश है इस मंत्र में भला बच्चे जब माता पिता के अनुगामी हो जाएँ दम्पती परस्पर माधुर्य में रहें तो समाज को सुखी व स्वर्गोपम अपने आप हो जायेगा। वैमनस्य एवं प्रेम का अभाव ही समाज में कलूष का वातावरण निर्मित करता है। अथर्ववेद में एक जगह **अज्येष्ठासौऽकनिष्ठासः** लिखा अर्थात् इस संसार में सभी एक दूसरे के सहयोग के लिए है कोई सदस्य छोटा या बड़ा नहीं है, समता का इससे उदाहरण और क्या होगा ?

बन्धुओं! हमारा पूरा विश्वास है कि यदि हम संसार को सुखी बनाना चाहते हैं तो हमें वेद पर ही चलना होगा क्योंकि उसी से भय, हिंसा, अशान्ति, शोषण, उत्पीड़न का वातावरण खत्म हो सकता है और संसार खुशहाल हो सकता है।

- आचार्य कर्मवीर

www.thearyasamaj.org

सामयिक प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का काले धन पर प्रहार और हमारा देश

- मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

8 नवम्बर, 2016 की रात्रि 8.00 बजे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने एक टीवी प्रसारण कर सरकार के एक हजार और पांच सौ के नोटों के प्रचलन पर सरकारी रोक की जानकारी देशवासियों को दी। स्वामी रामदेव जी ने अनेक वर्षों से बड़ी करेंसी के नोटों के प्रचलन पर रोक लगाने के समर्थन में आन्दोलन किया था तथा अपनी मांग को देष हित सहित कालाधन समाप्त करने में सर्वाधिक सहयोगी सिद्ध किया था। हमें लगता है कि मोदी जी ने कालेधन की समाप्ति हेतु एक हजार तथा पांच सौ के नोटों के प्रचलन पर रोक का निर्णय पर्याप्त सोच विचार कर लिया है। सरकार के कालेधन पर निर्णय से आतंकवादियों, नक्सलवादियों, माओवादियों, अलगाववादियों, हवाला कारोबारियों, रियल स्टेट, भूमाफियाओं, बड़े सरकारी अधिकारियों व व्यवसायियों आदि की कमर तोड़ दी है। सरकार का यह निर्णय देश के मध्यम व निम्न वर्गीय आयकर आदि नियमों का पालन करने वाले देश के नागरिकों के हित में लिया गया निर्णय है जिससे भारत के दूरगामी हितों को लाभ पहुंचेगा। इससे बच्चों की शिक्षा व मकान आदि के भी सस्ते होने की आषा की जा रही है। इस निर्णय से सभी देशभक्त व देश प्रेमी अतीव प्रसन्न हैं और मोदी जी को इस निर्णय के लिए खुले दिल से अपनी शुभकामनायें एवं बधाई दे रहे हैं।

यह एक ऐसा महत्वपूर्ण एवं बड़ा निर्णय था जिसे सभी स्तरों पर गुप्त रखा जाना आवश्यक था। इसी कारण अनेक ऐसे प्रबन्ध जिससे वर्तमान में देशवासियों को नये करेंसी नोट प्राप्त करने में कठिनाईयां आ रहीं है, उनका पूर्णतया निराकरण एवं समाधान नहीं किया जा सका। 8 नवम्बर, 2016 के बाद से ही देश में सर्वत्र सभी लोगों को सरकार द्वारा निर्धारित सीमा के अनुसार धन निकालने व उसकी व्यवस्था को लेकर युद्धस्तर पर कार्य किये जा रहे है। आरबीआई द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर धन पहुंचाने के लिए हैलीकाप्टर तक का सहारा लिया जा रहा है। बताया जाता है कि दो लाख के लगभग माइको एटीएम व गोबाइल एटीएम भी जनता की सुविधा के लिए उपलब्ध कराये जा रहे हैं। सरकार के सम्बन्धित विभागों सहित सभी बैंकों के अधिकारी भी इसमें सर्वाधिक सहयोग कर रहे हैं। बैंक एवं सरकारी बन्धुओं ने अपने शनिवार व रविवार के अवकाश के दिन ही नहीं छोड़े अपितु प्रत्येक दिन दो घंटे अतिरिक्त कार्य कर रात रात भर अपना हिसाब किताब मिलाते हैं। इस प्रकार यह लगभग बारह घंटे काम रहे हैं जिससे कि देशवासियों को कश्ट न हो। हमें यह भी जानकारी मिली है कि इन बैंक कर्मियों व हमारे पुलिस के बन्धुओं को व्यवस्था में लगे होने के कारण भोजन तक करने का समय नहीं मिल रहा है। इस अतिरिक्त कार्यभार के कारण अनेक बैंक कर्मियों को असुविधायें भी हो रही है। अनेक बैंक शाखाओं में पर्याप्त स्टाफ न होने पर भी वह सभी प्रकार की सुविधायें प्रदान करने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। मोदी जी ने भी मुक्त कण्ठ से इन सबकी प्रशंसा की है। हमें ऐसी भी सूचनायें मिली हैं कि अनेक रक्तचाप, सुगर सहित अनेक रोगों से ग्रसित बैंक कर्मियों सहित गर्भवती बैंक महिला कर्मचारी भी रात दिन काम करके मोदी जी की देश हित में जारी मुहिम को अपनी जी–जान से सफल बनाने में काम कर रही हैं। इतना सब कुछ होने पर भी नये नोटों व एटीएम में नई टैक्नोलोजी के स्थापना में समय लगने के कारण अनेक देशवासियों को कष्ट हो रहा है परन्तु वह सभी देश हित को सर्वापरि मानकर मोदी

जी के निर्णय के साथ हैं। देश अपने इन देशवासियों पर, जो कष्ट सहन कर भी एक हजार व पांच सौ के नोटों का प्रचलन बन्द करने के सरकार के निर्णय के साथ हैं, जितना भी गर्व करे कम है।

मोदी जी के इस निर्णय के कारण पाकिस्तान में छपने वाली फेक करेंसी का प्रचलन सर्वथा समाप्त हो जाने के कारण पाकिस्तान सहित सभी आतंकवादी, अलगाववादी, काश्मीर में सेना पर पत्थरों की वर्शा करने वाले लोग, नक्सलवादी, हवाला कारोबारी व जमीन की खरीद–फरोक्त जिसमें काले धन का अधिकाधिक प्रयोग होता है, का कारोबार पूरी तरह से ध्वस्त व समाप्त होकर रुक गया है जो मोदी जी की इस मुहिम की बहुत बडी सफलता है। इन अंतराष्ट्रीय कार्यों के बन्द होने से लगता है कि सरकार के पास एक हजार व पांच सौ के नोट बन्द करने के अतिरिक्त इन समस्याओं के हल करने का अन्य कोई उपाय था ही नहीं। इससे सभी देशवासी प्रसन्न है। इससे देश व समाज सुदृढ हो रहा है वा हुआ है। देश पर इसके दूरगामी अच्छे परिणाम होंगे।

देश के लिए मोदी जी के कालेधन पर प्रहार से जहां कालेधन वालों को दिन में तारे दिखाई दे रहे हैं वहीं हमारे देश में कुछ नेताओं व प्रभावशाली लोगों को मोदी जी की इस फैसले से लोकप्रियता बढ़ने और उनके काले धन के समाप्त होने से अतीव पीड़ा हो रही है। वह खुल कर स्पष्ट शब्दों में तो अपना दुःख व्यक्त कर पाने में असमर्थ है, अतः वह लोगों की परेशानियों को अपनी ढाल बना कर मोदी जी का अनेक कुतर्कों से विरोध कर उन पर आक्रमण कर रहे हैं जो सर्वथा अनुचित है। ईश्वर ऐसे नकारात्मक लोगों से देश की रक्षा करें, यह प्रार्थना है। हमें लगता है कि रामायण और महाभारत युद्ध की भांति व देश के स्वराज्य आन्दोलन की तरह ही यह भी एक प्रकार देश को कालेधन से मुक्त कराने व देश मे सत्य की स्थापना के लिए एक धर्मयुद्ध ही हो रहा है जिसमें निश्चित रूप से सत्य की विजय होनी है। देश की जनता को देश विरोधी छद्म देश हितैशियों के दुष्प्रचार में नहीं फंसना चाहिये और ऐसे लोगों को करारा उत्तर देते हुए प्रधानमंत्री जी को अपना समर्थन व सहयोग देना चाहिये। आज जो स्थिति है वह कल नहीं रहेगी। अगला सप्ताह आते–आते सारी स्थिति सामान्य हो जायेगी, ऐसा अनुमान किया जा सकता है और हमें यह सही लगता है। आगामी एक सप्ताह में सभी एटीएम सामान्य रूप से काम करने लगेंगे। बैंक से निकासी की सीमा भी सरकार ने बढ़ाई है। अब एक व्यक्ति अपने खाते में से चौबीस हजार रूपये प्रति सप्ताह के हिसाब से महीने में लगभग एक लाख रुपया निकाल सकता है। आगे इसमें और वृद्धि की आशा की जा सकती है। यदि बैंक खाताधारी अपना काम चैक व आनलाईन बैंक ट्रांसफर से करें तो कहीं दिक्कत आने की गुजांइश नहीं रहती है। हमें तो सौ या दो सौ की पुस्तक खरीदनी हो, जल, विद्युत, फोन आदि के बिलों का भुगतान करना हो तो हम घर बैठे ही उनका आनलाइन पेमेन्ट करते हैं जिससे हमें कहीं आना जाना भी नहीं पड़ता। यदि दुकानदार खुदरा सामान न दें तो शहर व नगरों में रहने वाले लोग समीपवर्ती मौल में जाकर वहां उचित मूल्य पर खरीददारी कर डेबिट व केडिट कार्ड से भुगतान कर भी आवश्यकता की वस्तुओं को प्राप्त कर सकते हैं। यह विषय पर बहुत कहा व लिखा जा सकता है। अतः सुविज्ञ पाठ कों के लिए इतना ही पर्याप्त है।

देश का यह दुर्भाग्य है कि कुछ समान विचारधारा के लोग अपनी महत्वाकांक्षाओं के कारण प्रधानमंत्री व सरकार का विरोध कर रहे हैं। यह स्थिति अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण एवं निराशाजनक है। हम यहां इतिहास से कोई उदाहरण देने से स्वयं को रोक रहे हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह विपक्षियों को अकारण देश के प्रधानमंत्री का विरोध न करने के लिए उन्हें सदबुद्धि प्रदान करें जिससे वह असहयोग का मार्ग छोड़ कर सहयोग का मार्ग अपनायें जिससे हमारा देश विश्व की उन्नत अर्थव्यवस्था बनने के साथ यहां न्याय का राज्य रामराज्य स्थापित हो सके। यही महर्षि दयानन्द और गांधी जी का भी स्वप्न था जिससे हमारे राजनीतिक दल कोषों दूर जा चुके हैं।

पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

सैद्धान्तिक ईश्वर का दयालु स्वरुप : कर्म फल

- डॉ. अशोक आर्य

दयालु ईश्वर ने जीव को कर्म करने में स्वतन्त्र बनाया है तथा फल भोगने के लिए उसे अपनी व्यवस्था के आधीन रखा है। कर्म का यह सिद्धान्त एक दार्शनिक व्यवस्था के अधीन करता है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत प्रभु ने जीव को कर्म करने के लिए पूर्णतया स्वतन्त्र रखा है। किये गये कर्म का फल क्योंकि कर्म पर ही आधारित होता है, अतः फल पाने के लिये वह अपने कर्म के ही आश्रित रहता है। यहां यह भी समझ लेना चाहिये कि अपने किये कर्म के फल पर तो जीव आश्रित है किन्तु इस फल को देने वाला ईश्वर है, जो एक जीव के द्वारा किये कर्मों के अनुपात से ही फल देता है, न तो वह न्यून अथवा न ही अधिक फल देता है।

ईश्वर दयालु है :

एक ओर तो ईश्वर को हम दयालु कह रहे हैं तथा एक हम कहते हैं कि वह किये हुए कर्मों का फल भी देता है। यदि कर्म अच्छे नहीं है तो उनके अनुरुप वह दण्ड भी देता है। दण्ड देकर रुलाने वाले को दयालु कैसे कहा जा सकता है ? यदि हम किसी भी देश की न्याय व्यवस्था को देखें तो हम पाते हैं कि वही राज्य सुखी है तथा सही रुप से कार्य करता है, जिसकी न्याय व्यवस्था कठोर होती है। यदि न्याय व्यवस्था कमजोर हो, किये गए अपराध का कठोर दण्ड न दिया जावे तो लोग दुष्ट हो जावेंगे तथा प्रतिक्षण दुराचार व मारकाट करते रहेंगे। सब ओर अन्याय व अत्याचार बढ़ जायेगा। यही व्यवस्था सृष्टि व्यवस्था में भी होती है। किये गये कर्म के तद्नुरुप फल ही उसकी दयालुता है। यह फल ही है, जिसके भय से हम बुरे कर्म करने से बचते हैं। यदि किये कर्म का तद्नुरुप फल न मिले तो हम अंकुश रहित होकर मन माने ढंग से बुरे कर्म कर अपने स्वार्थ की सिद्धि में लगे रहेंगे। अतः किये गए कर्म के अनुसार ही फल देना ईश्वर की न केवल दयालुता ही है बल्कि यह उसकी न्याय प्रियता भी है।

ईश्वर न्यायकारी है :

जब प्रभु की दयालुता को हम देख रहे होते हैं तो साथ ही साथ हमें उसके न्यायकारी स्वरुप के भी दर्शन हो जाते हैं। न्यायकारी वह ही हो सकता है, जो बिना किसी भेदभाव के यथोचित न्याय करे। कर्मानुसार फल दे। कर्म से न तो न्यून दण्ड दे तथा न ही अधिक। यदि वह दण्ड देते समय कहीं कोई चूक कर देता है, जिससे कुछ न्यून व अधिक फल दे देता है तो उसे न्यायकारी कैसे कहेंगे ? किसी दुकानदार को पैसा तो एक दिया जावे किन्तु प्रतिफल में वह दस पैसे की वस्तु दे देवे, ऐसे दुकानदार को तो न केवल सदा हानि ही उठानी होगी अपितु उसकी ख्याति को भी धक्का लगेगा। जब किसी के हित का ध्यान रखा जाता है तो उसे दया कहते हैं, किन्तु जब यथायोग्य फल दिया जाता है तो उसे न्याय कहते हैं। ईश्वर न्यायकारी है, क्योंकि वह यथायोग्य फल अथवा दण्ड देता है। इससे जीव का भी हित होता है। वह भविष्य में बुरे कर्म करने से बचेगा। उसे पता है कि यदि वह पुरे कर्म करेगा तो उसे दण्डित होना होगा तो वह बुरे कर्म करने से बचेगा तथा उसे पता होगा कि अच्छे कर्म करने से उसे प्रमादि नहीं पुरुषार्थी कहा जावेगा तथा उसका अच्छा फल देकर उसे लाभान्वित भी किया जावेगा तो वह अच्छे कर्म ही करेगा बुराई की ओर कभी नहीं बटेगा। किये गए कर्म का कितना फल मिलना चाहिये इसकी ठीक ठीक गणना ही न्याय कहा जा सकता है। इसमें ही जीव का हित भी है। यही ही ईश्वर की जीव के लिए दया भी है। न्यायाधीश जानता है कि वह यदि दया भाव से दण्ड नहीं देगा तो उससे जीव का अहित होगा। जब उसके कारण जीव का अहित होता है तो वह उसका दया भाव न होकर निर्दयता बन जावेगा। इस लिए वह दयालु ईश्वर सदा किये गए कर्मों का तद्नुसार दण्ड देकर या फल देकर न केवल न्यायकारी ही होता है। अपितु दयालु भी होता है।

ईश्वर के न्याय स्वरुप मिलने वाला दुःख अथवा सब कुछ भी हो वह जीव के लिए हितकारी व प्रेरणादायी होता है। जब बुरे कर्म का बुरा फल मिलता है तो उसे प्रेरणा मिलती है कि भविष्य में बुरा कर्म न करें अन्यथा दण्डित होना होगा। अच्छे कर्म का जब उत्तम फल मिलता है तो

उसका उत्साह लाभ प्राप्ति के लिए अच्छे कर्म करने की ओर बढ़ता है।

मानव जीवन में सुख और दुःख कर्म फल का ही परिणाम है। यह ठीक है कि मानव जीवन में सुख व दुःख उसके कर्मों के परिणाम से ही आते हैं, किन्तु जब तक नहीं आता तब तक हमें सुख का ठीक से आभास नहीं हो पाता। जब तक हम एक ही अवस्था में होते हैं तब तक दूसरी अवस्था का ज्ञान कैसे हो सकता है ? यह दुःख ही है, जिसके आने पर हमें पता चलता है कि सुख इससे कहीं अच्छा था। यदि हमने दुःख का कभी सामना ही नहीं किया तो इसके दूसरी ओर क्या है (इसका हमें पता कैसे चल सकता है ? जब तक हम सिक्के के पलट कर नहीं देखते दब तक हम कैसे बोल सकते हैं कि इसके दूसरी ओर क्या है ? वास्तव में कवि ने यह अमिष्ट ही कहा है कि 'दुःख के बिना नहीं सुख की गिनती, बुझते दीप जलाने वाला।'

अनेक लोग सुख व दुःख में भेद ही नहीं कर पाते। वह सुखी जीवन में भी रोते रहते हैं। प्रभु को दोष देते रहते हैं। दुःख तो देखा ही नहीं होता, इस कारण क्षणिक कमी को दुःख समझ कर रोने चिल्लाने लगते हैं। वह सीमित सुख को ही दुःख समझ बैठते हैं। ऐसे व्यक्ति को जब कभी दुःख आता है तो वह बुरी तरह से घबरा (भयभीत) जाता है। वह इसे भयंकर विपत्ती समझ बैठते हैं। उन्हें इससे निकलने का मार्ग दिखाई ही नहीं देता। वह नहीं जानते कि यह ही वह मार्ग है जिससे सुख की सत्यता का आभास होता है। अन्यथा पता ही न चले कि सुख क्या है।

मुष्य कभी स्वस्थ होता है तथा कभी रुग्ण भी हो जाता है। यह ठक है कि रोग आने से उसे क्षणिक कष्ट होता है। अनेक बार वह रोग ग्रस्त अवस्था में इतना दुःखी हो जाता है कि वह रोने व चिल्लाने भी लगता है। इससे उसका दुःख तो कम नहीं होता किन्तु कष्ट में कुछ वृद्धि ही होती है, साथ ही उसके आश्रित भी उसकी इस अवस्था को देखकर दुःखी हो उठते हैं। वह नहीं जानता कि दुःख के बिना सुख का पता ही नहीं चलता। इतना ही नहीं यह रोग मानव को स्वस्थ रखने का साधन भी है। जब हमें कोई रोग हतोा है तो हमारा शरीर तत्काल रोग का प्रतिरोध आरम्भ कर देता है। इस प्रकार शरीर के अन्दर एक संघर्ष आरम्भ होता है। जिसे कष्ट है, वह भी शरीर के अन्दर चल रहे इस संघर्ष से अनभिज्ञ होता है किन्तु रोग को भगाने के लिए हो रहे इस संघर्ष में स्वास्थ्य विजयी होता है तो स्पष्ट है कि हमारे शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ गई है। इस क्षमता के बढ़ने से अब शरीर में ऐसी क्षमता आ जाती है, जिसके होते हुए रोग पुनः जल्दी से शरीर में प्रवेश करने का साहस नहीं कर सकता।

कुछ ऐसी ही अवस्था सुख व दुःख की होती है। दुःख के आने से ही सुख की प्रतीति होती है। एक बार दुःख का सामना करने से पता चलता है कि इस दुःख से तो सीमित सुख ही अच्छा है। अधिक सुख नहीं आता तो भी उत्तम है। अतः जिस प्रकार रोग के बिना न तो ठीक से स्वास्थ्य का ही पता चलता है तथा न ही शरीर में प्रतिरोधक शक्ति आ पाती है। इस प्रकार ही दुःख आने पर ही हमें सुख का पता चलता है, उसकी कीमत हम ठीक से लगा पाते हैं। अन्यथा हम सुख को भी कोई महत्व न दें। ठीक इसके अनुरुप ही अच्छे व बुरे कर्म है। जब तक हम बुरे कर्मों का फल नहीं प्राप्त करते तब तक हमें अच्छे कर्मों का फल का ठीक से आभास नहीं हो पाता। अतः अच्छे व बुरे कर्म भी अन्योन्याश्रित होते हैं। बस हमें दोनों में भेद कर बुरे से बचना है तथा अच्छा करना है। यही कल्याण का साधन है, सुख सम्पत्ति प्राप्ति का साधन है, सफलता का रहस्य है। अतः जीवन में दुःखों से बचने के लिए जीव को सदा अच्छे कर्म करने चाहिये। *पता : १०४, शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी, जिला-गाजियाबाद (उ.प्र..*

निमन्त्रणम्

श्रीमद्दयानन्द-वेदार्ष-महाविद्यालय न्यास ११९, गौतमनगर नई दिल्ली का **८३वाँ वार्षिकोत्सव एवं ३७वाँ चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ २७ नवम्बर रविवार से १८ दिसम्बर १६ रविवार तक** आयोजित किया गया है।इस महायज्ञ के ब्रह्मा वेदों के प्रकाण्ड पण्डित **डॉ. महावीर** (पूर्व कुलपति उ.सं.वि.वि.) होंगे। महायज्ञ में आर्यजगत् के अनेको उच्चकोटि के साधु-संन्यासी, विद्वान्-आर्यनेता तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस महायज्ञ में आप सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित है।

निवेदक : प्राचार्य, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

जीवन-दर्शन यह नाराजगी किस पर और क्यों ?

★ श्री ओमप्रकाश बजाज

गुप्ता जी टेलीफोन विभाग वालों से रुष्ट है, शर्माजी को बिजली विभाग वालों से शिकायत है। श्रीवास्तव जी को नगर निगम वालों से गिला है। यादवजी डाकखाने वालों का रोना रोते हैं। नेमा जी जब भी मिलते हैं रेल्वे वालों को कोसते मिलते हैं। हम छः सात लोग इकट्ठे प्रातः भ्रमण हेतु जाते हैं। रास्ता भर चर्चा का केन्द्र बिन्दु एक ही होता है - विभिन्न विभागों के कर्मचारियों की अकर्मण्यता, काम न करने की प्रवृत्ति, बढ़ती हुई अनुशासनहीनता, फैलता हुआ भ्रष्टाचार, जनसाधारण की अवहेलना, हर स्तर पर हर जगह आम आदमी का तिरस्कार और शोषण।

बात कहीं से भी चले, घूम फिर कर आखिर आ इसी मुद्दे पर जाती है। आपसी चर्चा में ही नहीं समाचार पत्रों में भी इसी विषय पर तीखी टिप्पणियाँ होती है। अग्रलेख और संपादकीय लिखे जाते हैं। पाठकों के पत्र और प्रतिक्रियाएँ छपती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आज हर व्यक्ति कर्मचारी वर्ग के व्यवहार, कार्यशैली, मानसिकता से त्रस्त है।

आखिर यह गुस्सा, यह नाराजगी, यह आक्रोश किस पर और क्यों ? जिनकी सुस्ती, लापरवाही, कामचोरी, अनुशासनहीनता, दुर्व्यव्यहार, भ्रष्टाचार आदि कुप्रवृतियों पर हम आप निरन्तर क्षोभ एवं आक्रोश व्यक्त करते हैं वे क्या कहीं बाहर से आए हैं ? क्या वे हमसे आप से भिन्न है, अलग है ? नहीं, वे भी तो हम में से ही है। कैसी विडम्बना है कि स्वयं अपने ही रवैये पर हमें शिकायत भी है ! मजे की बात तो यह है कि बिजली विभाग वाले को रेलवे वाले से शिकायत है तो रेलवे वाले को बिजली वाले से, इसी प्रकार हर एक को एक दूसरे से असंतोष है।

आखिर ऐसा है क्यों ? जरा दिल पर हाथ रख कर बताइए कि किसी भी विभाग में कार्यरत आप का भाई, बेटा, बेटी यदि काम पर देर से जाता है, जल्दी भाग जाता है, लगन और ईमानदारी से काम नहीं करता, लोगों से दुर्व्यवहार करता है, घूस लेता है, अनुशासनहीन है, भ्रष्ट है तो क्या आप ने कभी उसे रोका टोका या समझाया बुझाया है ? यदि आप की पत्नी बहन या बेटी स्कूल या कालेज में पढ़ाने के समय अथवा कार्यालय में काम के समय गप लड़ाती, चाय पीती या स्वैटर बुनती है तो क्या आपने कभी उसे मना किया है ? सम्भवतः नहीं, यदि आप स्वयं भी एक कर्मचारी है तो जरा अपने अंदर झांक कर भी देख लीजिए कि कहीं आप स्वयं भी यही कुछ तो नहीं करते !

हमारी सामान्य प्रवृति ही यह है कि हमें दूसरों की आंख का तिनका तो नजर आ जाता है किन्तु अपनी आंख का शहतीर भी दिखाई नहीं पड़ता। हम दूसरों को सुधारने की बात तो करते हैं मगर स्वयं अपने ऊपर भूल कर भी निगाह नहीं डालते। पुरानी कहावत है नां कि "औरों को नसीहत खुद मियां फजीहत" बुजुर्ग कह गए हैं कि "खैरात हमेशा घर से शुरु होती है"।

जिन बातों की शिकायत हमें दूसरों से है, आवश्यक है कि सब से पहले हम स्वयं अपने आपको, अपने भाई, बेटे, बहन, पत्नी, बेटी को उनसे दूर करें। तभी बात बन सकती है। स्वयं दोषी होते हुए उन्हीं कमियों त्रुटियों के लिए दूसरों की शिकायत करने से कोई लाभ नहीं। यह भी कभी मत सोचिए कि एक व्यक्ति या चंद व्यक्तियों के आचरण में बदलाव या सुधार से क्या होगा। बूंद-बूंद से घट भरता है। बदलाव का आरम्भ सदैव इक्का-दुक्का से होता है। किसी भी अच्छे काम की शुरूआत ही कठिन होती है। बाद में तो लोग जुड़ते जाते हैं और कारवां बनता जाता है।

पता - बी-२, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर (म.प्र.)

पुण्य स्मरण

ऐसे थे स्वामी श्रद्धानन्द

२३ दिसम्बर बलिदान दिवस

- श्रीमती सुकान्ति

भारत की गरिमा के गायक अमर तुम्हारा नाम है
धन्य धन्य तुम श्रद्धानन्द शत् शत् तुम्हें प्रणाम है
भारत की माँ बड्ड पूजा में सुमन चढ़ाए थे तुमने
नारी शिक्षा इसी धरा पर बीज उगाए थे तुमने
श्री मोहनदास जी गांधी को महात्मा बनाए थे तुमने
दलित शोषित और पिछड़ो को गले लगाए थे तुमने
साम्प्रदायिक सौहार्द्रभाव के फूल खिलाए थे तुमने
विज्ञान विषय भी हिन्दी में हो, पाठ पढ़ाए थे तुमने
कृत्य तुम्हारे अगणित प्यारे "गुरुकुल" सेवाग्राम है
धन्य धन्य तुम श्रद्धानन्द
शत् शत् तुम्हें प्रणाम है, शत् शत् तुम्हें प्रणाम है ॥

स्वामी श्रद्धानन्द का नाम आते ही मस्तिष्क में एक ऐसा रेखा चित्र बनने लगता है ऐसे निर्भीक और तेजस्वी संन्यासी का जो गुलाम मुल्क की विषम परिस्थितियों में एक छत्र राज्य करने वाले कूटनीति प्रवीण अंग्रेजों की संगीनों के समक्ष अपना सीना तान कर खड़े हो जाते हैं और दुर्दान्त शासकों के प्रतिनिधि बाल भी बांका नहीं कर पाते। एक ऐसा सन्यासी जो विरोधी विचारों के लोगों के बीच न केवल आदर व सम्मान का पात्र बनता है बल्कि उनके सर्वोच्च धर्मस्थल पर खड़ा होकर भाई-चारा का संदेश सुनाता है। एक ऐसा महामानव जो साधारण सी दिखने वाली घटना पुत्री से

"ईसा ईसा बोल तेरा, क्या लगेगा मोल,
ईसा तेरा राम रमेया, ईसा तेरा कृष्ण कन्हैया"

पंक्तियाँ सुनकर आने वाले समय में भारत के खतरनाक भविष्य की कल्पना करके भारत में नारी शिक्षा का प्रबल प्रसारक के रुप में हमारे समक्ष आता है। ऐसा अधिकारी जो अपने नीचे कार्यरतजनों का भी आदर सत्कार करता हो और जो गुरुकुल के छात्र की उल्टी पात्र के अभाव में अपनी अञ्जली में लेता हो और जो अपनी सम्पत्ति के एक एक पैसा को भारत की भलाई में भेंट चढ़ा दे तथा भयंकर जानवरों के बीच अपने ही दोनों बच्चों को लेकर बैठकर संसार में विख्यात शिक्षा संस्थान की आधार शिला रखता है ऐसे ही अनेकों चित्र एक के बाद एक बनते रहते हैं लेकिन उस संन्यासी का सूर्य जैसा तेजस्वी जीवन और चन्द्र किरणों सा विशाल व्यक्तित्व का अन्त नहीं होता।

स्वामी श्रद्धानन्द अपने आप में एक संस्था थे, वह युग के निर्माता थे। धारा के विरुद्ध खड़े होकर अपने सुकर्मों द्वारा समाज का निर्माण करने वाले थे, उनके जीवन में इतने आयाम हैं कि उनके विलक्षण व्यक्तित्व से व्यक्ति अचम्भित हो जाता है कि क्या एक व्यक्ति एक ही जनम में इतनी योग्यता अर्जित कर सकता है। स्वामी जी अपने मानस गुरु देव दयानन्द की भांति जीवन की समग्रता समेटने वाले महामावन का प्रतिरुप बनकर हमारी प्रेमा का केन्द्र बन जाते हैं।

आप जानते हैं मुंशीराम ने युवावस्था में उत्तरप्रदेश के बरेली में स्वामी दयानन्द का व्याख्यान सुन शंका-समाधान कर नास्तिकता से आस्तिकता की ओर बढ़ गए। जालंधर में वकालत शुरु की **"वकालत और सच्चाई का मेल कठिन है"** यह अनुभव होते ही वकालत ठुकरा दी, आर्यसमाज की ओर रुझान बढ़ा महर्षि दयानन्द के सन्देश को जन-जन तक पहुँचाने अपना तन-मन-धन सर्वस्व समर्पण कर दिया। इसी समय से वकील मुंशीराम महात्मा मुंशीराम बन गए। ये भारत के प्रथम व्यक्ति थे जिन्होने लार्ड मैकाले की शिक्षा के खिलाफ ऋषि अनुमोदित गुरुकुल शिक्षा का बीज बोकर मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से शिक्षा देने का क्रान्तिकारी सूत्रपात किया। यह वह संस्था है जो आगे जाकर भारत को शान से मस्तक ऊँचा करने के साथ साथ

इंग्लैण्ड प्रधानमंत्री रेम्जेमेक्डोनलु को गुरुकुल पधारने मजबूर कर दिया था। सर्वस्व समर्पण की पराकाष्ठा संन्यास दीक्षा लेकर महात्मा मुंशीराम अब स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनकी दृष्टि में हिन्दी-मुस्लिम-सिख-ईसाई, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, बौद्ध, जैन सब समान थे। देश के किसी कोने में रहने वाले किसी भी जाति या धर्म या सम्प्रदाय के व्यक्तियों को कोई कष्ट हो और उसकी भनक उन्हें लग जाए तो वे अपने स्वास्थ्य की परवाह किए बिना तत्काल वहाँ दौड़ पड़ते थे - चाहे वे गढ़वाल के दुर्भिक्ष-पीड़ित हो, चाहे धौलपुर के समाज मंदिर का गिराने से विक्षुब्ध आर्यजनता हो, चाहे दिल्ली के अन्याय पीड़ित मुसलमान हो, चाहे गुरु के बाग में धर्म युद्ध में लगे सिख हों, या सदैव से पददलित दक्षिण की अस्पृश्य जनता हो सभी के लिए उन्होने अपने मन में एक सा दर्द अनुभव किया।

स्वामी जी को देश की स्वाधीनता अखण्डता और राष्ट्रीयता में भी अटूट विश्वास था। स्वाधीनता के लिए वे आजीवन लड़े। गुलामी की जंजीर को तोड़ने में कारगर समझ गांधी जी के असहोयग आंदोलन में कूद पड़े। सत्याग्रह समिति के उपप्रधान रहते हुए दिल्ली में रोलेट एक्ट के बावजूद आन्दोलन को चरम तक पहुँचाया। यही नहीं जालियाँवाला बाग काण्ड को बतौर स्वागताध्यक्ष होकर अनेक विघ्नों के बीज सफल बनाया, उनका विश्वास था कि वर्ण जाति धर्म एवं सम्प्रदायपरक भेदभाव बने रहने से भारतीय समाज चरम उत्कर्ष को नहीं पा सकता। इसीलिए उन्होंने छुआछूत जात-पात एवं रुढ़िवादिता को निर्मूल कर देशवासियों में भाईचारा प्रेम एवं एकता के सूत्र में बांधना चाहते थे, यही वजह है उन्होने दलितोद्धार एवं शुद्धि आन्दोलन का संचालन सफलतापूर्वक किया। पत्रकारिता के क्षेत्र में "सद्धर्म-प्रचारक", "श्रद्धा", "द लिबरेटर", "तेज", "अर्जुन" जैसे पत्रों के द्वारा विचार क्रान्ति का आन्दोलन चलाया।

हिन्दी सेवा के क्षेत्र में उनका योगदान अपरम्पार है, उन्होने रातो रात अपना उर्दू अखबार को हिन्दी में चेंज कर डाला। इस प्रकार स्वामी जी के असंख्य योगदान है, उनकी बढ़ती ख्याति से असंतुष्ट होकर एक मदान्ध मुस्लिम अब्दुल रशीद के हाथों बलिदान हो गए।

पता : सी.ए.वी. 12/बी, नन्दिनी माईन्स (दुर्ग)

स्वामी रामानन्द नहीं रहे

विगत दिनों पूज्य स्वामी रामानन्द जी महाराज वेदप्रचार प्रवास के दौरान इन्दौर में अचानक स्वास्थ्य खराब हुआ, स्थानीय आर्यजनों ने चिकित्सार्थ चिकित्सालय में भर्ती कराई, धीरे धीरे स्वास्थ्य सुधरने के बजाय बिगड़ता गया और असामयिक देहावसान हो गया। उनके अप्रत्याशित परलोक गमन से आर्यजगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। आपने एक दशक तक महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर के सक्रिय मिशनरी के रुप में पूरे देश में वेदप्रचार कार्य किया। परोपकारी (पाक्षिक) पत्र के माध्यम से भी समसामयिक विषयों पर पर्याप्त लेखनी चलाई। महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर आपका गहरा अध्ययन एवं मनन था। वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिए आप हमेशा लालायित रहते थे। मुझको भी छ.ग. प्रवास के दौरान वर्षों आपका प्रचारात्मक साथ मिला। आप पिछले एक दशक से छ.ग. का पिछड़ा क्षेत्र वनवासी अंचल रायगढ़ के लैलूंगा क्षेत्र में गुरुकुल संचालन, गौशाला, वानप्रस्थ आश्रम जैसे अनेक समाज कल्याणकारी योजनाओं का बड़ी कुशलता से संचालन संवर्धन कर रहे थे।

जीवन के सातवें दशक के बाद भी आपकी सक्रियता नौजवानों को लजाती थी। बड़ी व्यापक सोच के आप धनी थे। इनके कार्यों को देखते हुए छ.ग. शासन ने शहीद वीरनारायण सम्मान से सम्मानित किया है। आपके प्रयाण से आर्यजगत् शोक में डूबा है। दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए अग्निदूत परिवार एवं छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा प्रभु से प्रार्थना करती है।

- सम्पादक

www.thearyasamaj.org

स्वर्णिम स्मृति

स्वामी श्रद्धानन्द और गुरुकुल को जन्म देने वाली परिस्थितियाँ

डॉ. ईश्वर भारद्वाज, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
मानव चेतना एवं योग विज्ञान विभाग,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

जीवन के निर्विघ्न निर्वाह के लिये तीन देवियों की महती आवश्यकता होती है, इनमें से प्रथम सरस्वती, द्वितीय लक्ष्मी और तृतीय देवी शक्ति है। ये तीनों देवियाँ मानव को सब प्रकार का सुख देने में सक्षम है। प्राचीन काल से ही भारत में शिक्षा का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इसी कारण से पशु द्विज कहलाने योग्य होता है। कहने का आशय यह है कि जब कोई जन्म लेता है, उस समय वह पशु की श्रेणी में होता है और वह शिक्षा के द्वारा ही अपने (पारमार्थिक कल्याण) तथा समाज के लिये उपयोगी बन पाता है।

जहाँ तक शिक्षापद्धतियों का प्रश्न है, आज भी शिक्षाविद् इस तथ्य से सहमत है किन्तु प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का कोई विकल्प नहीं है। आधुनिक युग के पुरोधा महर्षि दयानन्द ने इसी पद्धति को आधार बनाकर नये उदीयमान भारत की परिकल्पना की थी। महर्षि दयानन्द ने शिक्षा पद्धति के जिस रुप की कल्पना की थी, उसके प्रयोगात्मक रुप को अस्तित्व में आने में कुछ समय लगा। प्रस्तुत निबन्ध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जा रहा है कि वे कौन से कारण थे, जिनके कारण लाला मुंशीराम महर्षि प्रतिपादित शिक्षा पद्धति को अपनाने को विवश हुए।

मुंशीराम के मन में यह दृढ़ इच्छा थी कि उनकी धर्मपत्नी भी सुशिक्षित हो, उन्होने इसके लिये प्रयास भी किया। सौभाग्य से उनको जानकारी मिली कि जालन्धर में एक वृद्धा ईसाई स्त्री हिन्दी सिखाया करती है। इस वृद्धा स्त्री से लाला मुंशीराम जी की धर्मपत्नी श्रीमती शिवदेवी ने हिन्दी पढ़ना सीखा था। बाद में वह स्त्री एक क्रिश्चियन स्कूल में नौकरी करने लगी और पुराने परिचित लोगों के घर जाकर बच्चों का उस स्कूल में प्रवेश कराती थी। लाला मुंशीराम जी की ज्येष्ठ पुत्री वेदकुमारी को भी वह उस स्कूल में ले गयी। यह घटना १६ अक्टूबर १८८८ की है और स्वयं मुंशीराम ने इस घटना का उल्लेख अपनी पंजिका में किया है। वह लिखते है - कचहरी से लौटकर जब अन्दर गया, तो वेदकुमारी दौड़ी आयी और जो भजन पाठशाला से सीखकर आयी थी, सुनाने लगी - **"इक बार ईसा ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल ? ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।"** इत्यादि। मैं बहुत चौकन्ना हुआ। तब पूछने पर पता चला कि आर्यजाति की पुत्रियों को अपने शास्त्रों की निन्दा करनी भी सिखाई जाती है, निश्चय किया कि अपनी (आर्यों की) पुत्री-पाठशाला अवश्य खोलनी चाहिये। इस घटना के तीसरे दिन रविवार को आर्यसमाज का अधिवेशन था, वहाँ रायबहादुर बख्शी से स्त्री शिक्षा के विषय में बातचीत हुई। उनको भी कन्या शिक्षा के विषय में समस्या आ रही थी, उनकी सहानुभूति मिलने पर उसी रात मुंशीराम ने कन्या-पाठशाला के लिये अपील लिखकर चन्दा भी इक्ट्ठा करना शुरु कर दिया। परन्तु बीच में **"सद्धर्म-प्रचारक"** पत्र निकालने का विचार मन में आ गया, इसमें पाठशाला का काम शिथिल हो गया,. फिर भी यह कार्य सर्वथा विस्मृत नहीं हुआ। पत्र के प्रकाशन के साथ-साथ पाठशाला के लिये भी वह चन्दा इकट्ठा करते रहे। डी.ए.वी. को लड़कों की शिक्षा का समाधान समझकर सद्धर्म-प्रचारक पत्र के माध्यम से वे कन्या पाठशाला के लिये जनजागरण करते रहे। मुंशीराम अपनी धुन के बड़े पक्के थे, उन्होंने जो एक संकल्प एक बार ले लिया, जब तक वह पूरा नहीं होता था, वह शान्त नहीं बैठते थे। फिर यह संकल्प तो मानसिक विचार श्रेणी से बहुत आगे बढ़ चुका था। सम्वत् १९४७ में वह पाठशाला खुल गई, जो आज कन्या महाविद्यालय के नाम से भारत की सर्वप्रधान

शिक्षा संस्थाओं में से एक है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि उस युग में भारतीय शिक्षा के प्रति जो रुझान देखने को मिलता है, उसका कारण मैकाले और ईसाई मिशनरी द्वारा दी जा रही शिक्षा का उद्देश्य छद्म ढंग से ईसाईयत को बढ़ावा देना रहा है। यदि कदाचित उस युग में अंग्रेजी राज द्वारा उपलब्ध करायी जा रही शिक्षा पद्धति दूषित न होती तो उस युग में गुरुकुल जैसी संस्थाओं के अस्तित्व में न जाने कितना समय और लगता। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द के आगमन से इस देश में जो जागृति पैदा हुई थी, उसके कारण पाश्चात्य शिक्षा लोगों के मन और मस्तिष्क में कहीं न कहीं कुण्ठा पैदा कर रही थी और वे विवश होकर किसी अन्य विकल्प की तलाश में थे और उनको यह विकल्प महर्षि दयानन्द द्वारा दिखाये रास्ते में दिखाई दिया।

जब एडव्होकेट मुंशीराम को यह लगा कि भारत का उद्धार अंग्रेजो द्वारा दी जा रही शिक्षा व्यवस्था से नहीं हो सकता तो उन्होंने पुरातन आर्ष पद्धति को पुर्नजीवित करने का निर्णय किया। इसके लिये उन्होंने आवाज उठायी तो रास्ते पर चलने का दायित्व भी उनके कन्धों पर आ गया। पं. सत्यदेव विद्यालंकार इस घटना का उल्लेख करते हुए लिखते हैं - "गुरुकुल की स्थापना का प्रस्ताव आपने ही आर्य जनता के सम्मुख उपस्थित किया था। उस प्रस्ताव को मूर्त रुप देने के लिये आपको ही गांव-गांव घूमकर गले में भिक्षा की झोली डालकर चालीस हजार रुपये जमा करना पड़ा। उसके आचार्य और मुख्याधिष्ठाता होकर उसको पालने-पोसने और आदर्श शिक्षणालय बनाने का सब काम भी आपको ही करना पड़ा। हृदय के दो टुकड़े दोनों पुत्र शुरु में ही गुरुकुल के लिए अर्पण कर दिये थे। फलती-फूलती हुई वकालत का हरा पौधा भी गुरुकुल के पीछे मुरझा गया था। पहले ही वर्ष सम्वत् १९५९ में आपने अपना सब पुस्तकालय गुरुकुल को भेंट किया। सम्वत् १९६४ में लाहौर आर्यसमाज के तीसवें उत्सव पर **"सद्धर्म-प्रचारक"** प्रेस भी, जिसकी कीमत आठ हजार से कम नहीं थी, गुरुकुल के चरणों में चढ़ा दिया। तीस हजार से अधिक लगाकर खड़ी की गई जालन्धर की केवल एक कोठी बाकी थी, उसको भी सम्वत् १९६८ में गुरुकुल के दसवें वार्षिकोत्सव पर गुरुकुल पर न्यौछावर कर दिया। सभा ने उसको बीस हजार में बेचकर वह रकम गुरुकुल के स्थिर कोष में जमा की। यह सब उस हालात में किया गया था, जबकि सिर पर हजारों रुपये का ऋण था और गुरुकुल से निर्वाहार्थ भी आप कुछ नहीं लेते थे।

कोठी को दान करते हुए सभा के प्रधान को लिखे पत्र में आपने लिखा था- "मुझे इस समय ३६०० रुपये का ऋण देना है, वह मैं अपने लेख आदि की आय से चुका दूंगा। इस मकान से उस ऋण का कोई सम्बन्ध नहीं है।" उपर्युक्त विवरण यह सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है कि इस गुरुकुल की स्थापना के मूल में जो भी कारण रहे हों, परन्तु उसकी स्थापना में जो पवित्र भावना से ओतप्रोत होकर जो बलिदान दिया जा रहा था, वह इतना उदात्त था कि उसको शब्दों की सीमा में बाँधना शायद सम्भव नहीं है। यह पवित्र उद्देश्य के लिये किया गया अपने ढंग का सर्वोच्च बलिदान था। अपने प्राणों का न्यौछावर करना कहीं अधिक सरल है, लेकिन जो सम्पत्ति बच्चों के भविष्य के लिये हो, उसका त्याग करना कितना कठिन हो सकता है, यह एक पिता ही जान सकता है।

अपने पिता की स्मृतियों में गोते लगाते हुए पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखते है - "पिताजी प्रायः लाहौर जाते रहते थे। अधिकतर आर्यसमाज के काम से और कभी-कभी मुकदमों के प्रसंग में लाहौर जाते थे तो दूसरे या तीसरे दिन वापिस आ जाते थे। वापिस आने की सूचना जाते हुए दे जाते थे। ठीक समय पर घोड़ागाड़ी स्टेशन पर पहुंच जाती थी। एक दिन हम लोग बहुत आश्चर्यचकित हो गए, क्योंकि पिताजी का सामान गाड़ी से उतारकर घर नहीं लाया गया। कोचवान ने अन्दर आकर कहा कि **'बाबूजी ने अपना सामान समाज-मन्दिर में ही उतरवा लिया है और कहा कि घर पर जाकर खबर कर दो।'** बाबूजी घर पर नहीं आये और समाज मन्दिर में उतर गये हैं, इस समाचार ने घर भर में तहलका सा मचा दिया। तायी जी पहले तो स्तब्ध सी रह गयीं, फिर पिताजी के इस कार्य के अनौचित्य पर काफी जोरदार टिप्पणी करने लगीं। हम चारों बच्चे घबराकर तायीजी के चारों ओर इकट्ठा हो गये, नौकर जिसका नाम रणुआ था, एक ओर खड़ा आँखों से आँसू बहा रहा था। हमारे ताया जी, जो परिवार के मौनधारी सदस्य थे, कुछ समय पीछे हाथ में हुक्का लिये हुए ड्योढ़ी से घर के अन्दर आये

www.thearyasamaj.org

और तायी जी को दिलासा देने लगे। जहां तक मुझे याद है, उनके दिये दिलासे का सारांश है था कि **'मुंशीराम हमेशा से ऐसा ही रहा है। जो दिल में आता है, वही करता है, तुम चिन्ता न करो, अपने-आप घर आ जायेगा।'** परन्तु तायीजी घर के मामले में ऐसे वैराग्य से सन्तुष्ट होने वाली नहीं थी। उन्हें संदेह हुआ कि पिताजी किसी बात से नाराज होकर घर में नहीं आ रहे हैं। कुछ समय पश्चात् उन्होने निश्चय किया कि समाज-मन्दिर में जाकर नाराजगी का कारण पूछा जाये। तायीजी ने नौकर को आर्यसमाज मन्दिर में पूछने के लिये भेजा कि हम लोग मिलने के लिये आना चाहते हैं, कोई रुकावट तो नहीं है। वह उत्तर लाया कि कोई रुकावट नहीं है। इसके बाद सभी लोग मिलने के लिये पिताजी के पास आर्यसमाज मन्दिर गये। पिताजी मन्दिर के द्वार पर प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने द्वार पर प्रवेश करते ही कहा -**"भाभी मैंने लाहौर में प्रतिज्ञा कर ली है कि जब तक गुरुकुल बनाने के लिये ३० हजार रुपये इकट्ठा न कर लूँगा, तब तक घर पर पैर न रखूँगा। इसी कारण समाज में ठहरा हूँ, घबराने की कोई बात नहीं है।"**

इस प्रकार जब प्रथम बार आधुनिक भारत में गुरुकुल की स्थापना का वातावरण बनाने में लाला मुंशीराम ने न केवल दयानन्द द्वारा दिये गये बीज को बोया ही, अपितु उसको पल्लवित करने का दायित्व भी उन्हीं के कन्धों पर आ गया। यदि एडवोकेट मुंशीराम अपनी धुन के पक्के न रहे होते तो शायद महर्षि के स्वप्न को साकार होने में पता नहीं कितना और समय लगता। आज भी हम उस युग के परिदृश्य पर विचार करते हैं तो यह एक असंभव कार्य प्रतीत होता है। एक स्थान पर स्वामी श्रद्धानन्द ने लिखा है कि वे शुरु में डी.ए.वी. कॉलेजों को ही लड़कों के लिये गुरुकुल समझते थे और मानते थे कि इससे महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार किया जा सकता है। इसलिये प्रारम्भ में लड़कियों के लिये ही शिक्षा व्यवस्था करने की चिन्ता थी। इससे यह बात विदित होती है कि उस युग में डी.ए.वी. के प्रति लोगों की कैसी धारणा थी, लेकिन आर्यजनता के साथ-साथ एडवोकेट मुंशीराम भी कालेज की शिक्षा व्यवस्था से निराश हुए।यद्यपि डी.ए.वी. संस्थानों ने भारत को स्वतन्त्र कराने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। निराश होने के कारण यह था कि इनमें ब्रह्मचर्याश्रम की पद्धति का अभाव था। आश्रम पद्धति की स्थापना के लिये 'प्रचारक' स्वामी श्रद्धानन्द लिखते है - **"सरकारी कालेजों पर तो हमारा अधिकार नहीं, किन्तु अपने कालेज पर इतना अधिकार हो सकता है कि उसके लिए शहर से दूर जगह ली जाय और कालेज के स्थिर भवन शहर में न बनाकर दूर बनाया जाये।"** प्रचारक नामक पत्र में आप प्रायः लिखा करते थे कि आश्रम व्यवस्था के बिना वर्णव्यवस्था कायम नहीं हो सकती। आश्रमों पर ही वर्ण निर्भर है। जब गुरुकुल नहीं है, तब आश्रम-पद्धति का उद्धार कैसे हो? गुरुकुल के सम्बन्ध में इस प्रकार की चर्चा तो प्रचारक पत्र में प्रायः शुरु के अंकों से पढ़ने को मिलती है, किन्तु उसके लिये स्पष्ट प्रस्ताव सम्वत् १९५३ के अंक में किया हुआ मिलता है। उस अंक में 'सन्तान को आर्य क्यों कर बना सकते हो ?' के शीर्षक से एक लेखमाला शुरु की गयी थी। शहर के वातावरण के बुरे प्रभाव से पैदा होने वाली बुराईयों का उल्लेख करने के बाद आपने एक स्पष्ट योजना गुरुकुल के सम्बन्ध में पेश की थी। उसका आशय यह था कि २० आर्य पुरुष ऐसे चाहिये जो अपनी सन्तान के लिये १५ रुपये मासिक खर्च कर सकें। अमृतसर के पास नदी के किनारे ऐसा प्राकृतिक सौन्दर्य है, जहां परीक्षण के लिये गुरुकुल खोला जाये। अपने दो बालकों को उसमें भेजने का निश्चय प्रकट करके अठारह और ऐसे आर्य पुरुषों के लिये अपील करते हुए लेखमाला को समाप्त किया।

उपर्युक्त विवरण से यह पता चलता है कि गुरुकुल खोले जाने में जो प्रमुख कारण रहे हैं, उनमें से सर्वप्रथम अंग्रेजी शिक्षा पद्धति रही है, उससे निराश होकर आर्य जनता डी.ए.वी. संस्थान खोले और जब इनसे भी अपेक्षित परिणाम हाथ नहीं लगा और महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वर्णव्यवस्था की स्थापना होती दिखाई नहीं दी तो फिर आर्यजनता का गुरुकुल की ओर मुंह मोड़ने के लिये स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल शिक्षा के लाभ तथा अंग्रेजी शिक्षा से होने वाली हानि गिनाते हुए गुरुकुल स्थापना के लिये वातावरण बनाया। अन्त में उसकी स्थापना का श्रेय भी आपको ही है। इस प्रकार एडवोकेट मुंशीराम गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था के अग्रदूत, संवाहक और पथप्रदर्शक से लेकर स्वप्न को साकार करने वाले युगनिर्माता भी रहे।■

वैचारिक

जीने की कला

- कन्हैयालाल आर्य

कठोपनिषद् में यम का एक वाक्य जीवन को तरंगित करने के लिए प्रेरणा देने के लिए उद्बोधन है। इसमें कहा गया है उठो जागो। इस संसार में जो प्राप्त करने योग्य है, उसे प्राप्त करो उसे जानो, उसे समझो। हमें जगाने के लिए प्रेरित किया गया है। एक जागरण तो है - प्रातःकाल बिस्तर से सोकर उठना, दूसरा जागरण है जब हम होश संभालते है और एक जागरण है जब हमें मिथ्या संबंधों से आहत होकर जागृति आती है कि इन सम्बन्धों में कुछ नहीं है। यही वास्तव में जागरण है परमात्मा के इस अमूल्य जीवन का सम्मान करना सीखो।

यह जीवन की सत्यता है कि जब तक जीवन रहेगा, दुख तो रहेंगे ही। दुःख आकृति परिवर्तन कर-कर के प्रतिदिन आयेगा। कभी अभाव का दुःख, कभी अज्ञान का दुःख, कभी अन्याय का दुःख और कभी शारीरिक दुःख ? इनसे बचा नहीं जा सकता। दुःख न हो तो सुख की अनुभूति नहीं होगी। सुख के साथ दुःख अनिवार्य है। लोग अपने दुःख के लिए दूसरों को दोषी ठहराते हैं। दुःख में अपने व्यक्ति भी साथ छोड़ देते हैं, कोई सहयोग के लिए आगे नहीं आता। स्मरण रखिये। सुख में सागर बहा दिया हो, सहयोग का उसका कोई मूल्य नहीं, दुःख में दो बूंद बहा दे, उसका बहुत मूल्य है।

सुख उस प्रभु की कृपा से मिलेगा। धन वैभव एकत्रित कर ला, सोने का बिस्तर बना लोगे। परन्तु निद्रा कहां से ले आओगे ? संपूर्ण आयु न्यायालय और औषधालयों के चक्कर काटते रहोगे। सुख चाहते हो तो सुख का स्वरुप परमात्मा की ओर चलो, तभी जीवन में जागृति आयेगी। संसार में लिप्त रहने से दुःख में वृद्धि होगी। सुख नहीं मिलेगा। साधनों को संग्रह करने में नहीं, जिस (आत्मा) लिए साधन है, उसे बचाने में लगो। जिस दिन यह जागृति जीवन आ गई, तो संसार को सभी वस्तुओं की पराधीनता समाप्त हो जायेगी। मन को भी जो मिल जाता है उसमें संतोष नहीं होता। जो अप्राप्त है उसे प्राप्त करने में व्यक्ति दुःखी रहता है। प्रयास यह होना चाहिये जो मिला है उससे सुखपूर्वक कैसे जीया जाय। देखा जाये तो जीवन में सुख-दुःख तो कुछ नहीं है जो अनुकूल नहीं लगता वह दुःख है जो अनुकूल लगता है वह सुख है। पराधीनता दुःख देती है स्वाधीनता सुख देती है। परमात्मा ने न स्वर्ग बनाया है और न ही नरक बनाया है संसार में स्वर्ग-नरक हमारे जीवन जीने की कला पर निर्भर करता है।

आज के युग में मनुष्य ने सुख सुविधाओं के साधन बहुत ढूँढ लिये परन्तु सुखी नहीं हो पाया। यह संसार की सुख सुविधायें हमें सुख नहीं देती। हमें संसार की वस्तुओं में सुख का भ्रम होता है और उसी की प्राप्ति के लिए हम लोभ रुपी नदी में छलांग लगाकर उसे पकड़ना चाहते हैं। किन्तु ज्यों ही उसके निकट पहुंचते हैं, हमें उससे निराशा ही मिलती है। सुख सुविधाओं के प्राप्त होने पर भी क्या हमारे दुःख कम हो जायेंगे ? क्या आज अमेरिका, फ्रांस, इंग्लैंड, जापान के धनी सम्पन्न व्यक्ति सुखी हैं ? क्या उनके दुःख कम हुए हैं? इसका कारण है व्यक्ति के पास जो कुछ है, उसमें यह प्रसन्न नहीं रहता है, परन्तु सारी आयु अभाव का रोना रोता रहता है।

परमात्मा ने मनुष्य को भाग्य निर्माण की शक्तियाँ दी है। मनुष्य में देवत्व भाव भी है और आसुरी भाव भी है। देवत्व जगाने के लिए पूरी शक्ति लगानी पड़ेगी अरोहण में बहुत कठिनाई है परन्तु असंभव नहीं है। जब व्यक्ति वितरण करने के लिए तत्पर हो जाये तो अन्दर का दिव्यभाव जागृत हो जायेगा। परमात्मा ने जो गति दी है। यह आगे बढ़ने के लिए दी है। जीवन में अच्छाईयां जोड़ते जाइये जीवन की कला आ जायेगी।

जीवन में कठिनाईयों से भागना नहीं, उनका मुस्कराते हुए स्वागत करना है। कठिनाईयां हमारे जीवन में बाधा डालने नहीं आती, हमारी समस्याओं का समाधान

करने आती है। बाधाओं को पार कर आगे बढ़ने वाले सत्य में महान है कर्त्तव्य के रथ से उतर कर भागने वाले अर्जुन को श्री योगेश्वर श्रीकृष्ण ने नई संजीवनी दी कि भागो नहीं जागो। महर्षि दयानन्द सरस्ती जब गुरु विरजानन्द की कुटिया का द्वार खटखटाते है, तो अन्दर से ध्वनि आई-कौन ? महर्षि दयानन्द जी ने उत्तर दिया - यही तो जानने आया हूं। गुरु विरजानन्द जी को लगा कि जीने की कला सीखने के लिए कोई जिज्ञासु शिष्य आ गया है। द्वार खुलता है, तम की अंधेरी रात्रि समाप्त हो जाती है और सूर्य अपनी आभा अपने शिष्य पर बिखरा कर उसे जीवन की कला सिखा देता है।

अपना कर्त्तव्य कर्म निरन्तर करते रहें। कई बार व्यक्ति समस्याओं से भागना चाहता है। समस्यायें सामने हों और अपने मुख मोड़ दें, यह तो वह अवस्था होगी जैसे बिल्ली को देखकर कबूतर अपनी आंखे बन्द कर ले और यह सोच ले कि खतरा समाप्त हो गया है। यह उसका भ्रम है। भागने से नहीं जागने से काम बनेगा। कबूतर को बोध कराना होगा कि परमात्मा ने तुम्हे उड़ने की शक्ति दी है, तू उड़ जा। समस्याओं के भागने से समस्यायें कम नहीं होगी। पहले अपने को देखो कि कहां उलझे हो ? वहीं से सुलझने का प्रयास करो ? चिन्ता, निराशा को जन्म देती है। निराश मन लेकर आप कुछ नहीं कर सकोगे। माली को भी पौधों से खर पतवार को हटाना पड़ता है तभी पौधों का विकास हो पाता है। समाज के वातावरण को नया रुप देने के लिए कुछ कांट-छांट तो करनी पड़ेगी। जीवन में महत्वपूर्ण है संघर्ष के लिए तत्पर रहना। मनुष्य अपने आप से भाग नहीं सकता। समस्याओं का निदान कायरता से नहीं, वीरता से करना होगा। चिन्ताओं को प्रभु को अर्पित कर दो। गीता के उस वाक्य **"कर्म करो और फल की चिन्ता प्रभु को अर्पित कर दो"** को अपने जीवन का अंग बनाना होगा। समर्पण कीजिये और निश्चित हो जाइये।

ऐ यात्री ! तेरी यात्रा लम्बी नहीं है, उठ जाग। मृत्यु रुपी रात्रि शीघ्र ही जायेगी। जीवन में अभी जागृति नहीं आई, तो तू अपने कर्त्तव्य से भटक जायेगा। जीवन में यात्रा से जागृति आती है। सत्संग से, साधना से। अपने अंतर में डुबकी लगाकर अपने स्वरुप को जानना ही साधना है। सत्संग जागृति है। अच्छा है जब शरीर साथ दे तभी इस कार्य की ओर आगे बढ़। वास्तव में यौवन काल में ही सत्संग, सेवा, साधना में रुचि जगाना चाहिए। जब शरीर साथ नहीं देगा और आप इन कार्यों को करने का विचार करेंगे तो पश्चाताप के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं आयेगा। जीवन के जिस भाग में जागृति आ जाये अपने आप को धन्य मानों और परमात्मा का धन्यवाद करो। जीवन यात्रा में अपने लक्ष्य को पहचानना होगा। जागृति का प्रवेश आरम्भ हो जायेगा।

मनुष्य ने चांद पर जाना सीख लिया। परन्तु इस धरा पर रहना नहीं सीखा। हमने लेना सीखा है देना नहीं सीखा। एक सुन्दर दृष्टान्त प्रस्तुत है -

एक लाला जी (व्यापारी) एक खड्डे में गिर जाता है। खड्डे में गिर कर शोर मचा रहा है, मुझे बाहर निकालो। लोग उसके पास आते हैं और कहते हैं कि अपना हाथ दो, हम तुम्हें बाहर निकाल देंगे परन्तु वह हाथ नहीं देता है। अन्ततः एक बुद्धिमान व्यक्ति जो उस व्यापारी की प्रावृत्ति को अच्छी तरह जानता था उसने कहा आप हट जाइये। मैं इसको बाहर निकालता हूँ। उसने कहा - लाला जी लीजिये मेरा हाथ, लीजिये। वह लाला जी झट से हाथ पकड़ता है और बाहर आ जाता है। बात एक जैसी है परन्तु जिसने जीवन में केवल लेना ही सीखा हो, वह देना क्या जाने। इसलिए यदि जीवन में सुख चाहते हो तो बांटना सीखो। जीवन जीना आ जायेगा।

आगे बढ़ने के लिए जीना सीखने के लिए हमें स्वयं में विश्वास रखना होगा। जिसे स्वयं पर विश्वास नहीं, उसे कभी भी ईश्वर पर विश्वास नहीं होगा। अतः आत्म विश्वास अति आवश्यक है। आत्म ज्ञान के बिना परोपकार की बात करना दूसरों को ठगना है। जैसा व्यवहार तुम अपने साथ अपेक्षा करते हो, वैसे दूसरों के साथ करो। दूसरों के प्रति कल्याण की भावना रखो। विघ्न डालने वाले विघ्न सन्तोषी मत बनो। कुछ लोग ऐसे होते हैं कि दूसरों के जीवन में बाधा डालने में ही आनन्द का अनुभव करते हैं, उन्हें दूसरों के जीवन में विघ्न डालने में ही सन्तोष मिलता

है। यह पिशाच वाली वृत्ति है यदि हम वैशाचिक वृत्ति के बीज बोयेंगे और अमृत की चाह करेंगे तो यह वही बात होगी।

अतः हमें अपराध वृत्ति के कांटे नहीं बोने। तभी तो कहा है यदि किसी के जीवन में फूल नहीं खिला सकते, तो कांटे बनकर मत रहिये। अतः अपराध वृत्ति से बचते हुए अपने को वही बनाओ, जिसकी फसल काटने में आनन्द आये। रावण की नगरी में विभीषण और दुर्योधन की नगरी में विदुर बनकर रहने वाला ही सत्य अर्थों में जीता है।

जीवन उसी का सार्थक है जो जल कर बुजने से पहले दूसरों के अंधेरों पर मुस्कराहट और प्रसन्नता ला दे। एक जला हुई दीपक हजारों बुझे हुए दीपकों को जला देता है। परन्तु हजारों बुझे हुए दीपक एक दीपक को भी जला नहीं सकता। मनुष्य का जन्म संसार के कीचड़ में फंसने के लिए बल्कि कमल की तरह कीचड़ में रहकर भी अपने सौन्दर्य से संसार को सुन्दरता देने के लिए खिला है। ऐ मानव ! तू भी संसार की आसक्ति से ऊपर उठकर अपने को कमल की तरह खिला ताकि तुम परमात्मा के सच्चे पुत्र बन सको। संसार की दृष्टि में सुन्दर बनने से बात नहीं बनेगी। परमात्मा के दरबार में सुन्दर बनना होगा, तभी हम प्रभु कृपा के पात्र बन सकेंगे। इस अन्धाधुंध जीवन में कहीं एक स्थान पर एकाग्र होकर सोचें कि मैं कहा से चला हूँ ? मेरा लक्ष्य क्या है ? मैने क्या खोया है ? क्या पाया है ? ऐसा सोचने से जीवन में एक समय ऐसा आ सकता है, जब जीवन का ध्येय समझ में आ जाये और वह है प्रभु को प्राप्त करना। हम संसार में जितना भी भटक लें परन्तु एक न एक दिन उस मूल सत्ता परमात्मा से जुड़ना होगा तभी हमें शान्ति प्राप्त होगी। जीने की कला आ जायेगी और परमात्मा मानव चोला सार्थक हो जायेगा।

पता : ४/४५, शिवाजीनगर, गुरुग्राम (हरियाणा)

सज्जन पुरुषों की एकरूपता

घृष्टं घृष्टं पुनरपि पुनश्चन्दनं चारुगन्धं, छिन्नं छिन्नं पुनरपि पुनः स्वादु चैवेक्षुकाण्डम्।
दग्धं दग्धं पुनरपि पुनः काञ्चनं कान्तवर्णं, न प्राणान्ते प्रकृति विकृतिर्जायते चोत्तमानाम्॥

भावार्थ :- सुख और दुःख जैसे साथ-साथ रहते हैं - तथैव उत्तम और अधम पुरुष भी इस वसुन्धरा पर एक साथ ही रहते हैं। अधम तो अधम रहते ही है - परन्तु सज्जन पुरुष कभी भी किसी भी विपत्ति के आने पर विचलित नहीं होते। दृष्टिक्षेप कीजिए- आप चन्दन को चाहे कितनी ही बार, बारम्बार क्यों नहीं घिसते चले जावें क्या वह अपनी गन्ध छोड़ देगा ? कदापि नहीं। ऐसे ही आप साँटे (गन्ने) को लीजिए। उसके टुकड़े टुकड़े कर डालिए, बारम्बर काटते ही काटते छीलते चले जाइए क्या वह अपने स्वाद बदल देगा ? कभी नहीं, कभी नहीं। वह तो उत्तरोत्तर अपना मधुर स्वाद ही प्रदान करवाएगा।

और सोने को लीजिए - स्वर्ण को अधिक से अधिक अग्नि में तपाइए। क्या वह अपना सोने का रङ्ग गुण छोड़कर ताम्बे या पीतल में कभी परिवर्तित हो जावेगा ? कभी नहीं। सोना-सोना ही रहेगा अपितु वह तो और चमकेगा। इसी प्रकार उत्तम पुरुषों की प्रकृति स्वाभाविक निश्चलता का प्राणान्त होने पर भी परिवर्तन नहीं होता। उनकी एकरूपता जैसी है - सदैव वैसी ही रहेगी।

- सुभाषित सौरभ

www.thearyasamaj.org

क्या हमारे लिए दूसरा व्यक्ति अग्निहोत्र आदि कर सकता है ? पिछले अंक का शेष

अग्निहोत्र आदि हमारे लिए दूसरा कर सकता है ?

- स्वामी मुक्तानन्द परिव्राजक

इस विषय पर केवल प्रत्यक्ष दृष्टान्त, युक्ति तर्क, अनुमान प्रमाण ही है ऐसा नहीं है। इस में शास्त्रीय प्रमाण भी कम नहीं है।

महर्षि दयानन्द जी अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध तक यज्ञ का वर्णन अपने ग्रन्थों में अनेकत्र उल्लेख करते हैं। कुछ बड़े-बड़े याग आपने भी सुने होंगे, जैसे पुत्रोष्टि याग राजा दशरथ ने किया था, अश्वमेध श्रीरामचन्द्र जी ने, राजसूय याग महाराजा युधिष्ठिर ने किया था। आज भी दक्षिण भारत में यह परम्परा जीवित है। बड़े-बड़े सोमयाग लगातार अनेक दिनों तक चलते हैं। पिछले वर्ष माननीय डॉ. धर्मवीर जी आदि १० मूर्धन्य विद्वान् बैंगलोर शान्तिधाम देखने के लिये गये थे। आचार्य श्री सत्यजित् जी अप्रैल २५-३० छात्रादि को लेकर पोटाम्बी, केरल गये थे सोम याग दर्शन के लिए। दोनों के साथ देखने का अवसर लेखक को प्राप्त हुआ है। उन यागों में १६ ऋत्विक् (पुरोहित) व १० चमस अध्वर्यु होते हैं। सम्पूर्ण याग (८-१०दिन) का कार्य वेदि निर्माण से लेकर आहुति प्रदान तक, दूध, दोहना, दही जमाना, हविष् द्रव्य निर्माण, चरू बनाना आदि समस्त कार्य पुरोहित लोग ही करते हैं। यजमान मुख्य होता है, खाली बैठा रहता है (कभी कभार थोड़ी बहुत क्रिया औपचारिक यजमान करता है शेष सभी पुरोहित ही करते हैं) मीमांसा दर्शन में प्रश्न उठाया गया कि सभी ने मिलकर याग का सम्पादन किया है तो पुण्य किस को मिलेगा ? तो उत्तर आया यजमान को ही मिलेगा, सारा व्यय वही करता है पुरोहित ने तो अपना पारिश्रमिक दक्षिणा दान प्राप्त कर लिया है, उन्हें याग का फल नहीं मिलेगा। यह बात सभी शास्त्रीय विद्वान् जानते हैं और स्वीकार भी करते हैं। जिन्होने शास्त्रों का दर्शन भी नहीं किया है, उन्हें कैसे ज्ञान होगा ?

ब्राह्मण ग्रन्थ का वचन महर्षि वात्सायन ने न्यायदतर्शन के भाष्य में उद्धृत किया है - **"अशक्तो विमुच्यते"** इत्येतदपि नोपपद्यते, स्वयमशक्तस्य बाह्यां शक्तिमाह। **"अन्तेवासी वा जुहुयाद् ब्राह्मणा स परिक्रीतः क्षीरहोता वा जुहुयाद् धनेन स परिक्रीत"** इति (न्याय दर्शन भाष्य ४-१-६०) इसका अर्थ इस प्रकार है - "कोई मनुष्य शरीर से शक्तिहीन हो जाए तो वह अग्निहोत्र कर्त्तव्य से मुक्त हो जायेगा क्या ? नहीं होगा। जो स्वयं शरीर से अशक्त है वह बाह्य शक्ति सम्पन्न अन्य समर्थ व्यक्ति के द्वारा करावें। उसके लिए उस का शिष्य हवन करे वह शिष्य-ब्रह्म=विद्या द्वारा खरीदा हुआ है, अथवा आजीविका के लिए जो हवन करता है वह क्षीरहोता (पुरोहित) उस अशक्त व्यक्ति के लिए हवन करे, वह पुरोहित धन के द्वारा खरीदा हुआ है" यहाँ इतना स्पष्ट है कि एक के लिए दूसरा हवन कर सकता है।

मीमांसा दर्शन में भी यह आता है कि स्वर्गफल, पुण्य केवल यजमान को मिलता है या यजमान पत्नी को भी? उत्तर - दोनों को मिलता है।

पुरुष कार्य = नौकरी करता है वेतन मिलता है, पत्नी का त्याग करने पर आधा वेतन पत्नी के खाते में चला जाते है। वैसे ही पति के मरने के बाद भी पत्नी को पेंशन मिलती है। इस से क्या निकलता है ? कर्म हम स्वयं न करने पर भी सहभागिता के कारण हमें फल मिलता है।

वैशेषिक दर्शन का सूत्र है **"बुद्धिपूर्वो ददाति"** वेद में बुद्धिपूर्वक रचना है और बुद्धिपूर्वक दान देने का विधान है। प्रत्येक दानदाता सत्पात्र को ही दान देना चाहता है। क्यों ? दान देने वाला अच्छा कर्म करेगा, अच्छे कर्म में हमारा धन व्यय करेगा तो हमें अधिक पुण्य मिलेगा, सामान्य कर्म हो तो सामान्य पुण्य और बुरे कर्म में लगाएगा तो हमें भी पाप लगेगा। कर्म दूसरा करता है फल दान दाता को मिलता है। वैसे अग्निहोत्र एक महान कर्म है, उसके लिए कोई दान देता है तो पुण्य मिलने में कोई शंका ही नहीं होनी चाहिए।

माननीय डॉ. धर्मवीर जी के कथन अनुसार आर्यसमाज के विद्यमान सर्वोच्च विद्वान् महापण्डित आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश जो अग्निहोत्र के प्रति अत्यन्त निष्ठावान हैं, नित्य प्रति यज्ञ करने वाले हैं। जब वे कहीं कार्यक्रम/प्रचार में बाहर जाते हैं, सामूहिक हवन होता है व्यक्तिगत अलग से कर नहीं पाते हैं (समय व स्थिति की अनुकूलता न होने से) तब पण्डित जी घी वहां सामूहिक हवन में दान करते हैं। भले ही वहां दूसरा व्यक्ति आहूति डालता है पुण्य तो पण्डित जी को ही मिलेगा। आचार्य जी महान ऋषिभक्त सैद्धान्तिक प्रामाणिक विद्वान् हैं। हमारे लिए अनुकरणीय हैं।

हमारे इस लेख यह अभिप्राय कदापि नहीं है कि स्वयं घर से अग्निहोत्र न करें। स्वयं करेंगे, अपने घर में करेंगे तो वहाँ का वातावरण शुद्ध होगा, स्वयं उस शुद्ध वायु (जो होम से उत्पन्न है) को ग्रहण करेंगे शरीर व मन पर प्रभाव पड़ेगा। स्वयं अपने हाथों से डालेंगे तो भावना बनेगी, श्रद्धा से करते हैं, अच्छे संस्कार बनेंगे। इसका कोई निषेध नहीं करता है। जो नहीं कर पाते उन लोगों के लिए विधान है कि अन्यत्र/अन्य द्वारा करवाएँ। उसमें द्रव्य का त्याग होता है, उसमें कोई अन्तर नहीं है, तो पुण्य में भी अन्तर आयेगा। एक किलो घी अग्नि में डालने से जो पुण्य मिलना है वह तो मिलेगा ही चाहे घर में अग्निहोत्र करें, चाहे गुरुकुल में करवाएँ पुण्य तुल्य ही रहेगा, जो अन्तर आयेगा वह अधिक लाभ नहीं मिलेगा, ऊपर लिख चुके हैं। बढ़िया भोजन करेंगे तो अधिक पौष्टिकता मिलेगी। बढ़िया भोजन प्राप्त न हो तो सामान्य भोजन को भी त्याग कर भूखा मरना कौन सी बुद्धिमता है ? क्या तर्क है ?

जो स्वयं तो घर घर में अग्निहोत्र कराने में समर्थ नहीं, उसका गुरुकुल, अग्निहोत्र केन्द्र, सामूहिक यज्ञ में घृत, सामग्री धन दान देने वालों को रोकना=पापी बनना है।

जिस किसी भी आश्रम, गुरुकुल, परोपकारी कल्याणकारी संस्था/सार्वजनिक स्थान में हवन/देवयज्ञ/दैनिक-अग्निहोत्र/बृहद् यज्ञ/महायज्ञ/वेद पारायण यज्ञ होते हैं। सब के सब उदारमना लोगों के प्रत्यक्ष या परोक्ष दान से ही होते हैं। इस सर्वहितकारी श्रेष्ठतम यज्ञ कर्म में भी दोष देखने वाले लेखक के कुत्सित विचारों का शास्त्रीय, तर्कसंगत, बुद्धि सम्मत, युक्तियुक्त, विवेकपूर्ण समाधान यहाँ प्रस्तुत करते हैं।

शास्त्र का परिज्ञान न हो और चित्त में मलिनता (राग-द्वेष भरा हुआ) है तो मन आहत और हृदय पर चोट लगेगी ही। इसके लिए किसी योग्य विद्वान् के पास जाकर अपने ज्ञान को बढ़ाएँ, योगाभ्यास में समय लगाएंगे, तो आप का मन आहत नहीं होगा, हृदय पर चोट नहीं लगेगी, शान्ति मिलेगी।

श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु ने पाक्षिक पत्रिका परोपकारी अगस्त (प्रथम) २०१६ अंक में तड़प-झड़प स्तम्भ में "यह क्या कर रहे हो ? यह क्या हो रहा है ?" शीर्षक में वानप्रस्थ साधक आश्रम में प्रचलित १२ घण्टे अग्निहोत्र की निन्दा की है। **उसका समाधान - दोष न होने पर भी गुण में दोषारोपण=परनिन्दा को आत्माश्लाधा मानने वाले लेखक लिखते हैं कर्म का फल कर्ता को ही मिलेगा। जो एक छोटा बालक भी समझ सकता है आहुति डालना एक कर्म है, और घी, सामग्री, धन उसके लिए लगाना या दान देना दूसरा कर्म है। दोनों कर्मों का फल अलग-अलग है, अलग-अलग कर्ता को मिलेगा। इसमें क्या दोष है ?** दूसरों का दान लेकर अग्निहोत्र करने से **"कर्म का फल कर्ता को ही मिलेगा"** यह मूलभूत सिद्धान्त कैसे खण्डित होता है ? वस्तुतः बुद्धि की न्यूनता है या अपवित्रता है ?

आत्मशुद्धि, कल्याण, निर्माण के लिए संध्या, जप, तप, स्वाध्याय स्वयं को ही करना पड़ेगा। हवन आदि शेष चार महायज्ञ स्वयं कर सकें तो अच्छा होगा, नहीं तो दूसरों से कराया जा सकता है। इसको हमने प्रत्यक्ष-अनुमान-शब्द प्रमाणों से सिद्ध किया है। लेखक ने केवल कथन किया हवन स्वयं को करना पड़ेगा दूसरा नहीं कर सकता इसमें एक भी प्रमाण नहीं दिया। न्याय दर्शन नहीं पढ़े तो कोई बात नहीं सत्यार्थ प्रकाश भी गहराई से पढ़ते तो ज्ञान होता **"लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिः"** अनर्गल कथन सत्य नहीं होता है।

क्या किसी ने यह कहा या लिखा है ? कि "हवन

के लिए दान भेजने से पाप क्षमा होगा" ? जब नहीं तो अपनी ईर्ष्या-ज्वलन से निराधार कल्पना करके दूसरे के ऊपर दोषारोपण क्यों करते हो ? **"आप को इस कर्म का दण्ड मिलेगा"** यह अपने आप को समझाइये, योगियों को समझाने की आवश्यकता नहीं है । आप अपना ही सुधार कर ले उससे आर्यसमाज की छाती में जो छुरी का घात करते हैं, उस पाप से बच जाएंगे लोगों को भी शान्ति मिलेगी। जो दूसरों की ओर एक-ऊँगली निर्देश करता है, उसकी तीन ऊँगली अपनी ओर होती है। जो व्यापक रुप में अग्निहोत्र करते हैं, वे आत्मघाती है ऐसा कोई नहीं मानता है, लेकिन आप अपने लेख से अपने को आत्मघाती सुतरां सिद्ध करते हैं।

आपने लिखा पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी ने लिखा है, पंच महायज्ञों को करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य कर्त्तव्य है। यह तो सभी जानते हैं, हम भी मानते हैं। इसलिए तो कहते है सब पांच महायज्ञ स्वयं करो नहीं कर पाते तो कम से कम ब्रह्मयज्ञ स्वयं अवश्य करो शेष चार यज्ञ दूसरों से करवाओं जब स्वयं के लिए अनुकूलता नहीं। अनुकूल होते ही स्वयं करना प्रारम्भ करो । आप इसके विपरीत दूसरों को नास्तिक बना रहे हैं। वह स्वयं तो कर नहीं सकता दूसरों से करवाने में आप रोक रहे हैं, वह नास्तिक बनेगा और क्या ? दूसरों से करवाता रहेगा तो भावना बनी रहेगी, मरेगी नहीं।

इसलिए सभी सज्जन पाठकों से निवेदन है कि कभी भी ऐसे अविद्वान् के कुत्सित लेखों से भ्रमित न होवें। हर विषय को शास्त्र की कसौटी से देखें, परखें। जो स्वयं इतना समर्थ नहीं है किसी शास्त्रीय विद्वान् से शंका पूछे जो शिक्षा-व्याकरण-निरुक्त-दर्शन-उपनिषद् आदि वैदिक ग्रन्थों का किसी गुरुमुख से अध्ययन किया हो। जो ऋषिभक्त ग्रन्थों का अध्ययन गंभीरता से नहीं करते है वैदिक धर्म के प्रति अच्छी भावना रखते हुए भी सिद्धान्त विरुद्ध लिख देते व बोल देते हैं। हमारे कथन में कोई दोष है, शास्त्रविरुद्ध बात है तो निःसंकोच बताएँ। हम सत्य को ग्रहण करने में असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत है । शास्त्र प्रमाण है, व्यक्ति नहीं। इस बात को पतञ्जलि महाभाष्यकार कहते हैं - शब्द - **प्रमाणका वयम् । यच्छब्दआह तदस्माकं प्रमाणम् ।**

एक ग्रन्थ/शास्त्र पढ़कर कोई विद्वान् नहीं बन जाता है। निर्भ्रान्त ज्ञान के लिए अनेक शास्त्रों का गहन अध्ययन आवश्यक है। आयुर्वेदकार लिखते हैं -

एकं शास्त्रमधीयानो न विद्याच्छास्त्रनिश्चयः।
तस्माद् बहुश्रुतं शास्त्रं विजानीयात् चिकित्सकः ॥
सुश्रुतःसूत्रस्थानम् ॥

धर्म शास्त्र स्मृति-ग्रन्थ से लेकर उपनिषद् तक इष्ट-आपूर्त की चर्चा करते हैं। इष्ट कर्म वे होते हैं जो अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए किये जाते हैं और आपूर्त जो दूसरों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होते हैं। आपूर्त जैसे कुआ खुदवाना, प्याऊ चलवाना, धर्मशाला बनवाना आदि हैं। साधारण जनता को भी यह ज्ञात है कि इन कार्यों को मजदूर करते हैं परन्तु पुण्य का भागी तो जो अपनी धन लगाता है वही है। आश्चर्य है विद्वान् होकर कैसे इस बात को समझ नहीं पाते हैं।

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है । आगामी **बोधोत्सव २३, २४, २५ फरवरी २०१७** को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर **टंकारा समाचार** का **ऋषि बोधांक** प्रकाशित होगा।

आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता १५ जनवरी २०१७ तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख, वेद, स्वामी दयानन्द, योग स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जनउपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हों । ऐसा निर्णय किया कि प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पृष्ठों से अधिक न हो, तो सुविधाजनक होगा। आप प्रकाशनार्थ सामग्री ई-मेल **tankarasamachar@gmail.com** पर वाकमेन चाणक्य टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं।

निवेदक : **अजय सहगल**, सम्पादक टंकारा समाचार

पीयूष आजीवन आचरणीय चार श्रेष्ठ कर्म

- मनुदेव 'अभय' विद्या वाचस्पति

स्वधया परिहिता श्रद्धया पर्यूढा दीक्षया गुप्ता।
यज्ञे प्रतिष्ठिता लोकोऽयं निधनम् ॥

अथर्ववेद १२/५/३

मंत्रार्थ - कर्त्तव्यपूर्त्ति के पश्चात् ही सुखी जीवन के रहस्य को जानने के विचार इस अथर्ववेदीय मन्त्र में समझाये गये हैं। स्वपरिश्रमोपार्जित अपने भाग को ही ग्रहण करने से सबके हितकारी हों। सत्य धारण में श्रद्धासहित सब ओर से सबको सत्याचरण पर दृढ़ होने की प्रेरणा करने वाले, सत्य भाषणादि के व्रतों के द्वारा सुरक्षित, विद्वानों के सत्कार, अनेक प्रकार के कला कौशल और शुभ गुणों के दान में, सब प्रकार से स्थिर रहने वाले, मृत्युपर्यन्त इन सभी गुणों को धारण करते हुए इस लोक में सानन्द रहें।

चिन्तन-मनन : इस मन्त्र में चार महत्वपूर्ण कर्त्तव्यों की ओर मानव समाज का ध्यान आकृष्ट कर जीवन को सुखी बनाने के लिए तथा मृत्यु पर्यन्त उनका आचरण करने का परामर्श दिया गया है। ये चार कर्त्तव्य इस प्रकार हैं :-

१. परिश्रम के पश्चात् जो वस्तु आपके हिस्से में आती है, उसे ही अमृत की तरह मूल्यवान समझो और उसे ही ग्रहण करो।
२. सत्य की पहचान कर उसके ऊपर आचरण करना तुम्हारा परम कर्त्तव्य है।
३. आजीवन तुम्हारा प्रत्येक अनुष्ठान (पवित्र कर्मकाण्ड) श्रद्धा से सुरक्षित हो।
४. सभी लोग दीक्षा से सुरक्षित रहने के साथ यज्ञीय भावना सदैव धारण करें।

अतएव प्रसंग उपस्थित हो गया है कि उपरोक्त चारो बिन्दुओं या कर्त्तव्यों के प्रति अति संक्षेप में समझाने का प्रयास कर परिश्रम को सुफल सहित सफल बनायें।

१. स्वधया परिहिताः - इसका सामान्य अर्थ यह है कि परिश्रम करने के बाद जो वस्तु जितनी मात्रा में अपने भाग या हिस्से में आवे, वहीं अमृत के समान श्रेष्ठ और ग्रहण करने योग्य है। वेद का यह सन्देश वर्तमान सामाजिक और आर्थिक परिवेश में बड़ा महत्व रखता है। इस समय बिना परिश्रम और तप के कुछ लोग अल्पात्यल्पा समय में 'रोड़पति' से 'करोड़ पति' बनना चाहते हैं। करोड़ पति बनकर सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करना अनुचित नहीं, अपितु वैदिक भावना है। अथर्ववेद में सैकड़ों मन्त्र हैं, जिसमें मनुष्य को धन के सरोवर में निरन्तर तैरते रहने की बात कही गई है, परंतु उस सरोवर में डूब मरने की बात को स्पष्ट रूप से मना किया है। परिश्रम और तप प्रायः समान भावार्थी शब्द है। परमात्मा ने स्वयं तप कर इस सृष्टि का निर्माण जीवों को कर्मों का फल देने के लिए किया है।

विडम्बना यह है कि समाज में ऐसे भी असुर तत्त्व है जो बिना श्रम और तप के दूसरों की सम्पत्ति को लूटकर कम से कम समय में सांसारिक सुख, इन्द्रिय-सुख प्राप्त करने की होड़ मचा रहे हैं। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टि से वेद का यह उपदेश अमृत तुल्य है कि यदि करोड़ पति या अरब पति बनना चाहते हो, तो परिश्रम करो। उसके पारिश्रमिक स्वरूप आप को जो भी प्राप्त हो, वही आपकी पूंजी और सम्पत्ति है। लूटपाट, चोरी-डकैती, हत्यायें आदि अनुचित हैं। इससे सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था खराब हो जाती है।

२. श्रद्धया पर्यूढा - अर्थात् तुम्हारा प्रत्येक कार्य सत्य की पहचान करके उस पर आचरण करना है। श्रद्धा मनुष्य का एक मौलिक सद्गुण है। बिना श्रद्धा या आस्था के मनुष्य खोखला है। लेकिन श्रद्धा के नाम पर और बुद्धि हीन होकर अंध-श्रद्धा रखना और भी अधिक खतरनाक है। श्रद्धा शब्द श्रत और धा के योग से बना है श्रत् अर्थात सत्य और धा का अर्थ धारण करना। इसे सरल शब्दों में इस प्रकार कह सकते हैं कि किसी तथ्य को स्वीकार करने के पूर्व उसका परीक्षण कर तर्क की कसौटी पर परखकर देखो कि उसमें कितना सत्य है। और फिर इसके पश्चात् तदनुसार

www.thearyasamaj.org

उसे स्वीकार कर उस पर आचरण करो। यहां पर आचरण करने पर अत्यधिक बल दिया गया है। शास्त्रों में आचार्य और आचरण का निकटवर्ती संबंध बताया है। गुरुकुल का आचार्य वही प्रमुख हो सकता है जो अपने स्वयं के आचरण से अन्तेवासियों की दिनचर्या को प्रभावित करे। केवल उपदेश देने या सुनने से कुछ नहीं होता। नैतिक गुणों में से किसी भी एक पर आचरण करने से मनुष्य का जीवन निखर जाता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सत्य में सदा संघर्ष रहा है। सत्य के नाम असत्य और श्रद्धा के नाम पर अंध श्रद्धा ने कई वैज्ञानिकों के प्राण हरण कर लिये हैं। विशेषकर बाइबिल के अनुयायियों में वैज्ञानिकों की नई खोजों का इसलिए विरोध किया कि उसमें बाइबिल का विरोध था। स्कूल में पृथ्वीगोल और घर में धार्मिक पुस्तक के अनुसार पृथ्वी चटाई के समान चपटी और लम्बी।

ऐसे विरोधाभासी मान्यताओं वाले समाज में विज्ञान, तर्क, शोध और अनुसंधान कैसे सम्पन्न हो सकते हैं ? इसलिए वेद का यह सन्देश बिल्कुल सत्य और तर्क पर आधारित है कि प्रत्येक सत्य पर श्रद्धा रखो। नवीन खोजों का सत्कार करो तथा सत्य को धारण कर उस पर आचरण करने से पारिवारिक और सामाजिक शांति रहती है।

३. दीक्षया गुप्ता – अर्थात् दीक्षा को धारण करने वाले सदैव सुरक्षित रहते हैं। यहां दीक्षा के संबंध में कुछ गहराई से विचार करने की आवश्यकता है। दीक्षा से पहले इसके पूर्व पक्ष शिक्षा पर थोड़ा सोच लिया जाय। शिक्षा का तात्पर्य केवल नैमित्तिक शिक्षा से नहीं है। शिशु उत्पन्न होते ही स्वयं तीन से परिवार बना लेता है। स्वाभाविक शिक्षा या ज्ञान तो प्राणी मात्र में होता है। परन्तु नैमित्तिक शिक्षा अर्थात् माता, पिता, गुरु, आचार्य, भाई-बहन, पुस्तक, विद्यालय, महाविद्यालय तथा समाज और राष्ट्र से भी मनुष्य समय-समय पर अपना ज्ञानवर्धन करता है। ये सब नैमित्तिक शिक्षा के साधन है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में शिक्षा समाप्ति पर तैत्तिरीय उपनिषद् की शिक्षाएँ ही वास्तविक दीक्षाएं है। छात्रावस्था में आचार्य के निकट अहर्निश रहकर जो कुछ भी सीखा है, अब समापन काल के बाद उस शिक्षा के विचारों में दीक्षित होकर अपना भावी जीवन का निर्वाह करना ही 'दीक्षा' है। भावी जीवन में 'दीक्षा' के मंत्र हमारे दिशा निर्देशक तत्व हैं। इन्हें स्वीकार करने तथा तदनुसार आचरण करने से मनुष्य सुरक्षित रहता है। ध्यान रहे, समाज में दो प्रकार के मूर्ख होते हैं प्रथम-अशिक्षित मूर्ख तथा दूसरे -शिक्षित मूर्ख। अशिक्षित को मूर्ख कहना मानों 'साले का साला' कहना। परन्तु पठित मूर्ख के संबंध में क्या कहा जाय, यह बड़ा कठिन है। श्रद्धा-रहित, कृतघ्न, कामचोर, वाचाल तथा कामी पुरुष यदि शिक्षित हो, तो उसे शिक्षित मूर्ख ही कहना पड़ेगा। ऐसे लोग परिवार, समाज और राष्ट्र के घातक तत्व है। ऐसे लोगों से दीक्षित लोग दूर ही रहे तो सुरक्षित रह सकते हैं

४. यज्ञे प्रतिष्ठिता – सबका जीवन याज्ञिक भावना में सब प्रकार से निहित हो। यह जड़ और चेतन संसार एक दूसरे के सहयोग और संगतिकरण से चल रहा है। बिना संगतिकरण के यह शरीर भी 'शत्रु' सा बन जाता है। इन्द्रियों के संगतिकरण का नाम ही जीवन है। जहां विसंगतिकरण हुआ कि 'राम नाम सत्य है' की तैयारी हुई। फिर बस ----।

यज्ञ शब्द का अर्थ देवपूजा, संगतिकरण और दान होता है। हम केवल हमारे लिए जीवित न रहे, अपितु स्वयं की रक्षा-समर्थता का ध्यान रखते हुए परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व हित का ध्यान रखें। हमारा यह जीवन दोहरी जिम्मेदारियों से परिपूर्ण है। अपनी लौकिक और पारलौकिक उद्देश्यों की पूर्ति के साथ ही संगतिकरण के अनुसार पारमार्थिक जीवन भी बनाये रखा है। विभिन्न दायित्वों से मन चुराने वाला 'यज्ञिय' नहीं हो सकता। परमात्मा स्वयं निःस्वार्थ भाव से यज्ञ कर रहा है और प्राणी मात्र को सुख प्रदान करने के प्रयत्न में रहता है। उसने यह सृष्टि जीव के सुख के लिए बनाई है। इस प्रकार आजीवन आचरण करते समय उपरोक्त चारों तत्वों तथा सिद्धान्तों का ध्यान रखने से ही मनुष्य सुखी रह सकता है। हमारे व्यावहारिक जीवन में इनका बड़ा महत्व हैं। ●

पता – 'सुकिरण' अ/१३, सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

www.thearyasamaj.org

व्यावहारिक

कैसा हो व्यवहार हमारा

- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

वर्तमान काल के भौतिकवादी युग में जब मनुष्य तथाकथित विकास की अंधी दौड़ की आपाधापी में बड़ी तीव्र गति अध्यात्म के शिखर से लुढ़कता अधोगति की तरफ फिसलता जा रहा है। ऐसे में कैसे दूसरे की टांग खींचकर आगे निकल पाऊँ, इसी दौड़ में एक दूसरे के प्रति हमारा व्यवहार कैसा हो इसे पूरी तरह भूल चुका है। यदि स्पष्ट रुप से कहें तो आज के मनुष्य का आपसी व्यवहार भी व्यापार बन चुका है। यदि किसी को किसी से कुछ निजी स्वार्थ का काम है तो उसका व्यवहार एकदम चाशनी की भाति मीठा हो जाता है। और यदि कोई काम नहीं है तो व्यवहार रुखा-सूखा कर्कश। इसी स्वार्थ आधारित व्यवहार ने रिश्तों को भी स्वार्थी बना दिया है और मतलब की दुनियां में मतलब के रिश्ते रह गए हैं। **बाप बड़ा ना भैया बस, सबसे बड़ा रुपैया।**

लेकिन प्रश्न उठता है कि हमारा व्यवहार दूसरों के प्रति कैसा हो हमें औरों से कैसा बर्ताव करना चाहिए। महर्षि देव दयानन्द ने आर्यसमाज के सातवें नियम में इस बारे में बहुत स्पष्ट निर्देश दिया है - "हमें सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए" अर्थात् एक व्यक्ति के दूसरे से व्यवहार के लिए तीन अनिवार्य सावधानियाँ देव दयानन्द ने बताई प्रथम प्रीतिपूर्वक दूसरा धर्मानुसार तीसरा यथायोग्य। अब तीन अनिवार्य शर्तों को व्यवहार कुशल बनने के लिए विस्तार से समझना आवश्यक है। तीनों का यौगिक विस्तृत अर्थ जाने बिना इन पर आचरण कर पाना संभव नहीं है। वैसे भी आज की दौड़ती भागती जिंदगी में हमने हर शब्द का अपने स्वार्थ के अनुरुप संकुचित रुढ़ी अर्थ करके अनर्थ कर दिया है। इसलिए प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तने का विस्तृत यौगिक अर्थ समझना आचरण में उतारने के लिए आवश्यक हो जाता है।

प्रीति वा प्रेम का सर्वाधिक दुरुपयोग वर्तमान काल में हो रहा है। प्रेम वा प्रीति के यौगिक अर्थ को संकुचित करते करते हमने इसे विपरीत लिंगों के वासनात्मक आकर्षण तक सीमित कर दिया है। जबकि प्रेम का तो बहुत विस्तृत अर्थ है - गुरु-शिष्य, पिता-पुत्र, मां-बेटे, पिता-पुत्री, माँ-बेटी, भाई-बहन, जैसे प्रगाढ़ संबंधों में प्रेम या प्रीति इन रिश्तों के अटूट बंधन के लिए आवश्यक है। प्रेम की अनुपम परिभाषा अथर्ववेद के तीसरे काण्ड के ३०वें सूक्त के पहले मंत्र में दी है।

अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या॥

अर्थात् एक मनुष्य अन्यम् दूसरे मनुष्य के साथ अभिहर्यत ऐसा व्यवहार करे इव जैसे अघ्न्या गाय जातम् वत्सम् बछड़े के साथ करती है। प्रेम व प्रीति का इससे अधिक सुंदर उदाहरण शायद कहीं भी देखने को नहीं मिलता। गाय अपनी जीभ से अपने नवजात बछड़े के शरीर से मल छुड़ा कर उसे साफ कर देती है और फिर साफ करने के बाद मलमुक्त करके अपना दुग्धपान करवाती है। इससे सुंदर इससे बड़ा और व्यापक प्रेम को उदाहरण भला और क्या हो सकता है। इससे स्पष्ट निर्देश मिलता है कि प्रीतिपूर्वक व्यवहार में हमें दूसरों के दोष छुड़वाकर उनमें सद्गुण भरने हैं यही है दूसरों के साथ प्रीतिपूर्वक व्यवहार ना कि किसी शराबी के साथ बैठकर शराब के जाम लगाना अपितु शराब छुड़वाकर अमृत की भांति दुग्धपान करवाना प्रीति या प्रेम व्यवहार की श्रेणी में आता है।

धर्मानुसार व्यवहार में कैसे हमारा आचरण दूसरों के प्रति धर्मानुकूल हो यह जानना अत्यंत आवश्यक है तो इसके लिए सरलतम उपाय है कि जैसा व्यवहार हम अपने जीवन में दूसरों से अपने लिए अपेक्षित करते हैं वैसा ही व्यवहार हम स्वयं उस स्थिति में दूसरों के साथ किया करें। महर्षि देव दयानन्द ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में मनुष्य को परिभाषित करते हुए स्वआत्मवत व्यवहार को मनुष्य के लिए अनिवार्य गुणों में रखा है। जैसा हम अपने जीवन में दूसरों से व्यवहार चाहते हैं यदि वैसा दूसरों के साथ करें तो

व्यवहार संबंधी कोई समस्या पैदा नहीं होती। अपने कार्यालय में बैठकर अपने पद की शक्तियाँ का उपयोग करते समय यदि सामने फाइल लेकर खड़े व्यक्ति के साथ व्यवहार करने से पूर्व यदि एक पल के लिए हम स्वयं को उसके स्थान पर खड़ा करके सोचें और फिर जैसा व्यवहार उस स्थिति में हम अपने लिए अपेक्षित करते हों वैसा व्यवहार हम उस समय सामने खड़े व्यक्ति के साथ करें। यदि स्वआत्मवत व्यवहार के धर्मानुसार आचरण को हम अपनी जीवन शैली बना लें तो निश्चित रुप से जीवन में अपने व्यवहार के कारण सफल हो सकते हैं।

यथायोग्य व्यवहार स्वआत्मवत व्यवहार का विस्तार है अर्थात् जैसा जिस के लिए अपेक्षित वा योग्य हो। यह अंग्रेजी के टिट फॉर टैट जैसे को तैसा से भिन्न है। इसके क्रिया की प्रतिक्रिया नहीं आती अपितु जो जैसा है उसको वैसा योग्य उचित व्यवहार आता है। अर्थात् दोषी अपराधी को उचित दंड और निर्बल धर्मात्माओं को संरक्षण सत्कार इसी यथायोग्य व्यवहार की श्रेणी में आता है। इस प्रकार यदि हम सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करेंके तो निश्चित रुप से जीवन में सफलता के सोपान चढ़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पायेंगे।

पता - ६०२, जीएच-५३, सैक्टर-२०, पंचकूला (हरियाणा)

-: कविता :-

"मैं हूँ दयानन्द"

जो पापों के पंख में फंसता नहीं हैं।
वह किसी से भी डरता नहीं है॥
भगवान को अपना बना लो।
ज्ञान के पुष्पों से मन को सजा लो॥
मन में सत्यरुपी हवन रचा लो।
ज्ञान की गंगा में गोता लगा लो॥
मैं हूँ ऋषियों का अनुयायी, नित्य चिन्तन करता हूँ।
वैदिक धर्म के खातिर ही जीता हूँ मरता हूँ॥५॥
पापों से सदा दूर रहता हूँ।
सत्य कहने में कभी नहीं डरता हूँ॥
दुष्टों को भी गले से लगाता हूँ।
श्रद्धानन्द जैसे महान् बनाता हूँ॥
अमीचन्द जैसे शराबी को सुधारता हूँ।
वेदों की ओर लौटो, यही पुकारता हूँ॥
जिसने मेरी बाते मानी।
उसको लाभ हुआ न हुई हानि॥
दयानन्द सत्य कहने में डरता नहीं है।
दयालु प्रभु से कोई बचता नहीं है॥
गलत मार्ग पर चलने वालों को बचाता हूँ।
संभल जाओ, उन्हें समझाता हूँ॥
अमीचन्द और स्वामी श्रद्धानन्द को,
मैंने ही उन्हें सुधारा और महान् बनाया।
पं. लेखराम और गुरुदत्त विद्यार्थी को,
सत्य का पथिक और विद्वान् बनाया।
मैं ऋषियों का भक्त, मृषा न बोलता हूँ।
वैदिक धर्म के खातिर ही जीता हूँ मरता हूँ॥६॥

००-००

- शेष अगले अंक में

रचयिता : डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री,
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद (हरियाणा)

दयानन्द समो लोके न भूतो न भविष्यति।
दयानन्द सा कोई और न हुआ न होगा।

www.thearyasamaj.org

गवेषणात्मक

अनन्त कोटि सृष्टि का प्रलय एक साथ होता है या अलग-अलग

- ओमप्रकाश आर्य

(एक वैज्ञानिक संगोष्ठी के तथ्यात्मक विचार)

महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश के अष्टमसमुल्लास में सृष्टि उत्पत्ति स्थिति और प्रलय विषय पर व्याख्या करते हुए लिखते हैं - **"यह सब जगत् सृष्टि से पहले अन्धकार से आवृत्त, रात्रिरुप में जानने के अयोग्य, आकाशरुप सब जगत् तथा तुच्छ अर्थात् अनन्त परमेश्वर के सम्मुख एकदेशी आच्छादित था ।"** वे सत्यार्थ प्रकाश के नवमसमुल्लास में लिखते हैं- **"वह मुक्त जीव अनन्त व्यापक ब्रह्म में स्वच्छन्द घूमता, शुद्ध ज्ञान से सब सृष्टि को देखता, अन्य मुक्तों के साथ मिलता, सृष्टि विद्या को क्रम से देखता हुआ सब लोक-लोकान्तरों में अर्थात् जितने ये लोक दिखते हैं और नहीं दीखते उन सब में घूमता है । वह सब पदार्थों को जो कि उसके ज्ञान के आगे हैं सबको देखता है। जितना ज्ञान अधिक होता है उसको उतना ही आनन्द अधिक होता है ।"**

स्वामी जी के कथनानुसार - "यह सब जगत् सृष्टि से पहले अन्धकार से आवृत्त था ।" जरा विचार करें यह सब जगत् अर्थात् हम जिस सृष्टि में रह रहे हैं उसी का बात है । सृष्टि का कहीं आदि अन्त है या नहीं । यह आज तक किसी वैज्ञानिक ने घोषणा नहीं की, अपितु इतना जरूर कहते हैं कि आकाशगंगा और नीहारिका का निरन्तर विस्तार हो रहा है । वे यह भी मानते हैं कि बहुत से ऐसे तारे हैं जिनका प्रकाश अभी तक करोड़ों वर्षों में पृथ्वी तक पहुंचा ही नहीं है । इस आधार पर सृष्टि का विस्तार अनन्त है । इसे परमात्मा ही जाने, यह मनुष्य की कल्पनाशक्ति से परे है ।

हमारी पृथ्वी, हमारा सौरमण्डल, हमारी आकाशगंगा, असंख्या आकाशगंगाओं से बनी नीहारिकाएँ, नीहारिकाओं से परे भी कुछ होगा । इस आधार पर अनन्त कोटि सृष्टि है । महर्षि दयानन्द को शब्दों पर ध्यान दें - "अनन्त परमेश्वर के सम्मुख एकदेशी आच्छादित था । यह एकदेशी शब्द ध्यातव्य है ।" एकादेशी का विलोम सर्वदेशी होता है । प्रलय में सृष्टि एकदेशी अन्धकार से आवृत्त थी सर्वदेशी नहीं । परमात्मा सर्वदेशी है । प्रलय एकादेशी है । चिन्तन करें - सब कुछ एक साथ बनता नहीं तो सब कुछ एक साथ बिगड़ेगा कैसे ? अगर हम अनन्त कोटि सृष्टि का प्रलय एक साथ मान लेगे तो हमारा वैदिक सिद्धान्त असत्य हो जायेगा । अब महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों पर विचार करें - "वह मुक्त जीव सब सृष्टि को देखता है, उन सब में घूमता है ।" जब हम यह मान लेगे कि सृष्टि का प्रलय एक साथ होता है और वह प्रलय चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष तक रहता है तो क्या इतने काल तक मुक्त जीव कुछ देखेगा नहीं, कहीं घूमेगा नहीं ? फिर तो उसकी स्थिति बद्ध जीवों जैसी हो जाएगी । सृष्टि का प्रलय एक साथ न मानने पर मुक्त जीवों के लिए कोई फर्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि जहाँ प्रलय नहींहोगा, मुक्त आत्माएँ वहाँ चली जाएंगी । ऐसा मानने पर हमारे वैदिक सिद्धान्त पर कोई आँच नहीं आती ।

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के नवमसमुल्लास में लिखते हैं - "मोक्ष में जीवात्मा जब सुनना चाहता है तब श्रोत्र, स्पर्श करना चाहता है तब त्वचा देखने के संकल्प से चक्षु मुक्ति में हो जाता है । यह उसका स्वाभाविक शुद्ध गुण है । यदि हम सृष्टि का प्रलय एक साथ मान लेंगे तो क्या चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष तक मुक्त जीवात्मा कुछ देखना नहीं चाहेगा । इतने समय तक अन्धकार में निश्चेष्ट बना रहेगा क्या ? फिर उसकी मुक्ति क्या हुई ? एकदेशी प्रलय मानने पर उसके लिए कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड में वह भ्रमण करेगा । महर्षि एकदेशी शब्द ही यह सिद्ध कर रहा है कि सम्पूर्ण सृष्टि का प्रलय एक साथ नहीं होगा ।

www.thearyasamaj.org

पाती परदेस की - आचार्य ज्ञानेश्वरार्य:

देशान्तर

- ईश्वरकृपयात्र कुशल तत्रापि भवतु। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आमंत्रण पर अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने हेतु १९ अक्टूबर २०१६ को नेपाल की राजधानी काठमाण्डू पहुंचा। सम्मेलन में भारत के १५-२० राज्यों के हजारों की संख्या में तथा विदेशों से भी सैकड़ों आर्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभा के अधिकारियों तथा नेपाल के स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के परम पुरुषार्थ से, कुछ अव्यवस्थाओं को छोड़कर सम्मेलन आशातीत सफल रहा और अविस्मरणीय बन गया, नेपाल में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु भूमि अधिग्रहण करके, उस पर विशाल भवन बनाकर, बहुआयामी केन्द्र की स्थापना करने की योजना बनायी गयी है, तदर्थ धन राशि भी संग्रह की गयी है।

सामान्य रुप से नेपाल के लोगों में सरलता, स्वामिभक्ति, कर्त्तव्यनिष्ठा, समर्पण, त्याग, तपस्या आदि विशेष गुण पाये जाते हैं, इन्हीं के कारण आज समस्त भारत में इन्हें अपने घरों, कारखानों, सोसायटियों आदि संस्थानों में आरक्षक के रुप में रखा जाता है। अशिक्षा, निर्धनता, कल्पित देवी-देवताओं की, ईश्वर रुप में पूजा, अंध-विश्वास, पाखण्ड से युक्त निरर्थक-अनर्थक, कर्मकाण्डों, छुआछूत आदि अनेक प्रकार के दोषों के कारण इस देश का जितना विकास होना चाहिए था, नहीं हो पाया, बल्कि विश्व में एक ही हिन्दू राष्ट्र था, वह भी समाप्त हो गया। यद्यपि भारत की तरह नेपाल विदेशी आक्रान्ताओं के पराधीन नहीं रहा, किन्तु परोक्ष रुप से न केवल पाश्चात्य देशों ने बल्कि भारत ने भी अपने पड़ोसी, एक मात्र हिन्दू राष्ट्र की उन्नति करने, इसे सशक्त, समृद्ध बनाने हेतु विशेष प्रयास नहीं किया, बल्कि शोष ही किया गया। आज चीन, नेपाल को विशेष रुप से सहायता करके, राजनैतिक दृष्टि से अपने पक्ष में करने का प्रयास कर रहा है, जिसके दूरगामी भयंकर परिणाम होंगे।

आज इक्कीसवीं शताब्दी में भी नेपाल में शान्ति, सुख, समृद्धि, स्वर्ग आदि की प्राप्ति के लिए, पूजा, भक्ति, अर्चना आदि के नाम से अत्यन्त मूर्खतापूर्वक, हिंसक, घिनौनी, क्रूर, आसुरी, पैशाचिक, घृणित, परम्परायें प्रचलित हैं, जिनको देख, सुन, पढ़कर हृदय सिहर जाता है। उदाहरण के लिए एक ही, दिन में, खुले मैदान में, हजारों की संख्या में मूक भैंस आदि पशुओं की निर्मम, गंडासों से हत्या की जाती है, जिसके परिणाम स्वरुप खून की नदियां बह जाती है। ऐसे ही अन्य अंधविश्वास, पाखण्ड पूर्वक क्रियाकाण्डों को देखकर नई पीढ़ी नास्तिकता, स्वच्छन्दता, भोग पारायणता की ओर अग्रसर होती जा रही है, यही स्थिति भारत की है, नेपाल की क्या बात करें।

कुछ उत्साही, आशावादी, पुरुषार्थी, कर्मठ, कार्यकर्त्ताओं को छोड़ देवें, शेष अधिकांश वैदिक धर्म में आस्था रखने वाले सज्जनों में आर्य भावना के प्रचार-प्रसार-विकास-गुणवत्ता के विषय में निराशावादी भावना घर कर गयी है। ऐसे व्यक्ति आध्यात्मिक-धार्मिक दृष्टि से नास्तिक ही कहलाते हैं और आशावादी आस्तिक कहलाते हैं। सर्वप्रथम इस निराशावाद को समाप्त करना चाहिए। यह निराशा अकर्मण्यता, उपेक्षा, दोषदर्शन, निन्दा, स्वार्थ प्रधानता आदि अवगुणों को उत्पन्न करती है। ये निराशावादी स्वयं तो कुछ करते नहीं है, अपितु जो उत्साही, त्यागी, तपस्वी, निष्ठावान, समर्पित, कर्मठ कार्यकर्त्ता होते हैं, जो अपने तन-मन-धन सर्वस्व की आहुति देकर, भूखे-प्यासे रहकर, निन्दा, अपमान, विरोध, बाधा अनेक प्रकार की प्रतिकूलताओं को प्रसन्नतापूर्वक सहन करते हुये, दिन-रात, निष्काम भावना से सर्वहितकारी श्रेष्ठ कार्यों को सम्पन्न करते रहते हैं, उनको हतोत्साहित करते हैं, उनका उपहास करते हैं, उनकी केवल त्रुटियों, न्यूनताओं, भूलों को ही देखते हैं, और उन्हीं का सर्वत्र प्रचार करते रहते हैं, ऐसे व्यक्तियों

www.thearyasamaj.org

को टीका टिप्पणी, कटाक्ष किये बिना शान्ति नहीं मिलती है। ऐसे निराशावादी-नास्तिक, समाज-संगठन के लिए शत्रुओं से भी कहीं अधिक घातक होते हैं। ऐसे ही आन्तरिक निन्दकों के कारण समाज संगठन के सक्रिय कार्यकर्त्ता, घबराकर, विवाद-विरोध-झड़गड़े से बचने के लिए चुपचाप घर में जाकर, निष्क्रिय बनकर बैठ जाते हैं।

संगठन को निर्बल, विघठित, शिथिल करके उसे असफल बनाने में एक घातक दुष्प्रवृत्ति यह भी है कि मात्र सुनी-सुनाई प्रमाणों से अभंयकर परिणामों प्रभावों का विचार किये बिना, सर्वत्र प्रचार कर देना, जबकि होना यह चाहिए कि जिस व्यक्ति या संगठन से संबंधित बात हो, उससे पूर्व मिलकर स्पष्टीकरण कर लेवें। अन्यथा अप्रमाणित मिथ्या बातों का आवेश में आकर, अतिशयोक्तिपूर्वक प्रचार करने से, संगठन के सारे प्रयोजन असफल हो जाते हैं। अतः इस अत्यन्त विनाशक दुष्प्रवृत्ति को समाप्त करना मुख्य कार्य है। संगठन को असफल बनाने में एक घातक परम्परा यह भी चल रही है कि कोई व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह जब तक स्वयं संगठन में अधिकारी बने रहते हैं, तब तक तो तन-मन-धन-समय सब कुछ लगाकर, अनेक प्रकार के कष्टों को उठाकर भी पर्याप्त कार्य करते हैं किन्तु जिस दिन पद-अधिकार-दायित्व नहीं रहता, तब वे संगठन में रहते हुये भी वर्तमान के कार्यकर्त्ताओं को सहयोग, समर्थन, प्रोत्साहन, शुभकामना, आशीर्वचन, धन्यवाद देने की बात दूर रही, वे नितान्त उपेक्षित, निष्क्रिय, मूकदर्शक बनकर घरों में बैठ जाते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि वे संगठन में है ही नहीं, संगठन से उनका कोई लेना-देना नहीं है, कुछ भी कर्त्तव्य शेष नहीं रहा है। बल्कि कुछ तो वर्तमान के कार्यकर्त्ताओं-अधिकारियों का उनकी कार्यशैली का गौण-मुख्य का प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप में विरोध भी करते हैं, यह प्रवृत्ति-परम्परा भी संगठन के लिए महाघातक है, इस दुष्ट प्रवृत्ति को भी समूल नष्ट करना अतिआवश्यक है।

हे देवाधिदेव महादेव! आप अपने कृपाकटाक्ष से हम आर्यों के मन-बुद्धि-अन्तःकरण को इतना पवित्र बना दो कि अपने ही नहीं परायों को भी सामान्य त्रुटियों, भूलों, न्यूनताओं, दोषों को देखकर उद्विग्न न हों, बल्कि सहन कर लेवें, अन्यों के गुणों, विशेषताओं यशः, कीर्ति, प्रगति को जानकर मन में प्रसन्न हों। परस्पर एक दूसरे की सहायता करें, बिना ही पद, प्रतिष्ठा, अधिकार, दायित्वों के निष्काम भाव से अपने पूर्ण सामर्थ्यानुसार सामाजिक, सर्वहितकारी कार्यों में सर्व प्रकार से सहयोग करने व करवाते रहें, ऐसी श्रद्धा, निष्ठा, त्याग, तप, समर्पण की भावना हमारी आत्मा में भर दो यही वरदान आपसे मांग रहे हैं, आशा ही नहीं अपितु पूरा विश्वास है कि आप शीघ्र ही इस प्रार्थना को पूरी करेंगे इसी भावना के साथ।

आर्यवीर दल एवं युवा चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : २४ दिसम्बर१६ से ३१ दिसम्बर 201६ तक

कार्यक्रम स्थल : गुरुकुल वैदिक आश्रम सलखिया, जिला-रायगढ़ (छ.ग.)

पावन सान्निध्य आचार्य डॉ. देवव्रत जी सरस्वती (प्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्यवीर दल दिल्ली)

एवं अनुभवी योग शिक्षक श्री भैरोसिंह आर्य द्वारा

शिविरर्थियों हेतु निर्देश :- 1. शिविरार्थी की उम्र 12 वर्ष से ऊपर हो। 2. ऋतु अनुसार ओढ़ने का शाल, कम्बल, भोजन के बर्तन, टार्च, लाठी, तेल, साबुन साथ लायें। 3. शिविर का गणवेश हाफ, पेंट (खाकी), कुर्ता पायजामा, सेन्डो बनियान, सफेद जूते, मोजे (पीटी शूज) व पहनने के उचित कपड़े साथ लायें। 4. सभी शिविरार्थी अपना नामांकन २० दिसम्बर २०१६ की शाम तक अवश्य करा लें। 5. सभी शिविरार्थी २३ दिसंबर २०१६ को दोपहर ३.०० बजे तक शिविर स्थल पर पहुंचे।

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें :- **जोगीराम आर्य** (अध्यक्ष आर्य विद्या सभा एवं सभा कोषाध्यक्ष)

मोबा. नं. 09977152119, त्रिनाथराम आर्य (प्राचार्य) **मोबा.नं. : 8959754147**

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से सर्दी नजला (साइनस) का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

भागदौड़ व तनावपूर्ण जिंदगी में लोगों का बीमारियों से बचना आसान नहीं है। बदलती जीवन शैली के चलते आये दिन कोई न कोई बीमारी हमें घेरे रहती है, प्रदूषण, मानसिक तनाव, वातावरण के बदलाव, खान-पान की गलत आदतें, जिससे नए जीवाणु विकसित होते हैं, सर्दी जुकान समझकर उसे गंभीरता से नहीं लेते, जो आगे चलकर यह समस्या बढ़ जाती है। होमियोपैथी में इन रोगों की अचूक औषधियाँ हैं, जो लक्षणों के आधार पर देने से रोगों को नियंत्रण करने में सफलता मिलती है। सामान्य जुकाम को नैसोफेरिन्जाइटिस, राइनोफेरिन्जाइटिस अत्यधिक नजला या जुकाम के नाम से जाना जाता है। यह ऊपरी श्वसन तंत्र का आसानी से फैलाने वाला संक्रामक रोग है, जो अधिकांश नासिका को प्रभावित करता है, ऐसे दो सौ से अधिक वायरस होते हैं जो सामान्य जुकाम का कारण बन सकते हैं। नाक साइनस गले व कंठनली (ऊपरी श्वसन तंत्र का संक्रमण) मुख्य रुप से नासिक मनुयों में सबसे अधिक होने वाला यह संक्रामक रोग है।

लक्षण :-

सबसे आम लक्षणों में खांसी, नाक का बहना, नासिका मार्ग में अवरोध और गले में खराश होती है, मांसपेशियों का दर्द, थकान का अनुभव, सिर में दर्द भूख कम लगना, नवजात शिशुओं और बच्चों में यह एक आम समस्या बन गई है। बलगम का रंग हरा या पीला होता है। बहुत जल्द छिक आना अधिक ठण्ड महसूस करना, बुखार आना आदि इसके लक्षण हो सकते हैं।

होमियोपैथिक उपचार :-

होमियोपैथी पद्धति से उपचार कराकर कई रोगी स्वस्थ हो गए हैं एवं कई रोगियों का उपचार चल रहा है। सम्पूर्ण लक्षणों को मिलान कर चुनी हुई औषधि देने से अत्यधिक सफलता पाई गई है।

प्रमुख औषधि :- जेल्सिमियम, एकोनाईट, फेरमफास, मार्कसाल, यूपिटोरियम, ब्रायोनिया, सल्फर, नक्स, एलियमसीपा, बेलादोना आदि।

कविता

नया जंग फिर शुरु करो

हर हाथ रंगा है रिश्वत से, हर शख्स ठगी से जुड़ा हुआ,
पिंजर से पिंजर निकल रहे, हर जगह गबन है दफन हुआ।
पेट्रोल के नाम पे खुली लूट, सरकार स्वयं जब चला रही,
उस लूट को रोके कौन भला, शासन ही जिससे जुड़ा हुआ।
रुपयों की कीमत कौड़ी हुई, जनता की बचत सब हवा हुई,
खैरात लुटा कर कर्जों की, बैंकों का बण्टाधार किया।
आतंक उत्पात नहीं रुकते, हर सांस जुल्म से जली हुई,
निर्दोष की मौतों पर इनकी, कुर्सी का पाया टिका हुआ।
शिक्षा-स्वास्थ्य व्यापार बना, केपीटेशन के नाम लूट मचा,
कानून-न्याय की परवाह किसे, शासन ही डाकू बना हुआ।
जनतंत्र नहीं ये जातितंत्र, परिवार-वाद का है षड़यंत्र,
देश की लूटिया डुबो कर भी, अपनो को मालामाल किया।
धर्म-जुनून का तुष्टीकरण, हल नहीं है देश-समस्या का,
मत बख्शो देश-भंजकों को, सख्ती से कुचलो खत्म करो।
क्या यही है देश की आजादी ? दी इसके लिए थी कुर्बानी ?
इक नया जंग फिर शुरु करो, मक्कारों से मुल्क को मुक्त करो।

- मधु काबरा

समाचार प्रवाह

आर्यसमाज बालकोनगर में वार्षिक उत्सव का सफल आयोजन

बालकोनगर (कोरबा)। आर्यसमाज बालकोनगर में दिनांक २१ अक्टूबर १६ से २३ अक्टूबर १६ तक वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया था, जिसमें आमंत्रित विद्वानों में श्री वीरेन्द्र वैदिक जी सहारनपुर से एवं श्री कुलदीप विद्यार्थी जी बिजनौर से पधारे थे। आमंत्रित राजनेताओं में कोरबा के सांसद डॉ. बंशीलाल महतो जी एवं कटघोरा के विधायक श्री लखनलाल देवांगन प्रमुख थे। २० अक्टूबर १६ को प्रातः ९ बजे से प्रभात फेरी निकाला गया, इसमें आर्यसमाज के सदस्य एवं विद्यालय के विद्यार्थियों ने देश भक्ति धर्म भक्ति के नारों से आसमान गुंजा दिया। २१ अक्टूबर को प्रातः ८ बजे से ९ बजे तक यज्ञ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। ९.३० बजे से कुलदीप विद्यार्थी जी सुमधुर भजनों का आनन्द श्रोताओं ने खूब उठाया। तत्पश्चात् आर्य विद्वान् श्री वीरेन्द्र वैदिक जी का सारगर्भित व्याख्यान हुआ। श्री वैदिक जी ने दार्शनि विषयों को अत्यन्त सरलता से उदाहरणों के माध्यम से आम जनता तक पहुंचाते रहे। इसी श्रृंखला में २२ व २३ अक्टूबर १६ को भी जारी रही। आमंत्रित राजनेता प्रथम दिवस २१ अक्टूबर को सायंकाल के कार्यक्रम में पहुंचे एवं कार्यक्रम समाप्ति तक पूर्ण समय दिया, उन्होने विद्वानों को सुना बाद में अपने उद्‌बोधन में उन्होंने विद्वानों एवं कार्यक्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा की। आर्य समाज के द्वारा राजनेताओं को स्मृति चिन्ह के साथ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया एवं सत्यार्थ प्रकाश के बारे में उन्हें बताया गया तथा एक बार सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढ़ने की सलाह दी, जिसकों राजनेताओं द्वारा स्वीकारा गया। कार्यक्रम का शीर्षक रखा गया था "सुखमय जीवन" प्रतिदिन प्रातः एवं सायं के भजनों एवं उद्‌बोधन में अनेक प्रकार के समाज सुधार संबंधित पाखण्ड खण्डन संबंधित विषयों को बताया गया, जिसका नगरवासियों ने उपस्थित होकर पूरा लाभ उठाया। अनेक व्यक्ति पहली बार आर्यसमाज के कार्यक्रम में उपस्थित हुए थे, सभी ने कार्यक्रम की अत्यन्त प्रशंसा की। २३ अक्टूबर १६ के सायं अंतिम सत्र में भजन प्रवचनों की समाप्ति के पश्चात् कार्यक्रम के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले को स्मृति चिन्ह, शाल व श्रीफल देकर सम्मानित किया गया। जिसमें हरनारायण साहू, जयशंकर साहू, चिंतामणि साहू, सरस्वती व छोटू मरावी, गीता साहू, अशोक साहू, मेहरुनिशा शामिल थे। कार्यक्रम के दौरान श्रीमती गीता विद्यालंकार ने सफल रुप से मंच संचालन किया। आर्यजगत् के विभूतियों डॉ. धर्मवीर एवं अर्जुनदेव वर्णी जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित किया गया तथा आर्यसमाज बालको नगर के संदस्य कौशिक जी की बेटी नन्दिनी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित किया गया। अंत में आर्यसमाज के प्रधान श्री गोपीराम साहू जी ने आभार प्रदर्शन कर कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की। तीनों दिन सुबह का नाश्ता, दोपहर का भोजन एवं रात्रि का भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज की तरफ से की गई थी, अंतिम दिवस पर ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया।

संवाददाता : मंत्री आर्यसमाज बालकोनगर कोरबा

१३३वाँ महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस सम्पन्न

धमतरी। आर्यसमाज धमतरी द्वारा अग्निदेव आर्य प्राथमिक एवं डी.ए.व्ही. माध्य. विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक ३० अक्टूबर १६ को महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस मनाया गया।

आर्य समाज धमतरी के प्रधान श्री अजय गोस्वामी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डालते हुए समस्त उपस्थित सदस्यों को भजन सुनायें।

हवन एवं सत्संग कार्यक्रम में श्री अजय गोस्वामी प्रधान, श्री सत्यकाम आर्य मंत्री, श्रीमति रत्ना आर्य, श्रीमति उषा सोनी, श्रीमति कृष्णा सोनी, श्रीमति अन्नपूर्णा नेताम, श्रीमति सीमा शिन्दे, कु. सीमा रजक, कु. आयुषी गोस्वामी, कु. मुस्कान सोनी उपस्थित हुए।

संवाददाता : श्रीमति सीमा शिन्दे, धमतरी

आर्यसमाज सेक्टर–६ द्वारा "वेदप्रचार अभियान २०१६" सोल्लास सम्पन्न

भिलाई। आर्यसमाज सेक्टर-६ भिलाई का २९ दिवसीय "वेदप्रचार अभियान २०१६" सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में भिलाई-दुर्ग के विभिन्न स्थानों व घरों में पारिवारिक यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। यह २८ सिंतबर १६ से प्रारम्भ होकर २६ अक्टूबर १६तक निरन्तर चला। इन कार्यक्रमों में श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए वेदों के विद्वान आचार्य महावीर मुमुक्षु जी मुरादाबाद से तथा आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय जी दिल्ली से पधारे थे। इसके अलावा भजनोपदेशक आचार्य सुमित्रदेव आर्य सहारनपुर से तथा पं. सतीष सुमन जी (मुजफ्फर नगर) से पधारे थे। उपदेश प्रमुखतः पंच यज्ञ (अर्थात् ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, बलिवैश्व देव यज्ञ, अतिथि यज्ञ) पर विशेष बल दिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये प्रधान श्री जितेन्द्र प्रकाश सल्होत्रा, मंत्री रवि आर्य एवं वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री राजकुमार शास्त्री ने सतत् निरन्तर सहयोग प्रदान किया। *संवाददाता : रवि आर्य, मंत्री आर्यसमाज सेक्टर-६भिलाई*

आचार्य अर्जुनदेव जी वर्णी को श्रद्धाञ्जलि

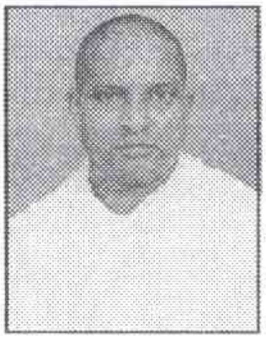

हरयाणा । आर्यजगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, विन्रमता एवं सरलता की प्रतिमूर्ति, आर्ष संस्कृति के पोषक, मन, वचन, कर्म से सच्चे प्रहरी समर्पित व्यक्तित्व, योग कला में प्रवीण, दर्शनो के ज्ञाता, वैदिक धर्म के आस्थावान प्रवक्ता आचार्य अर्जुनदेव वर्णी जी का हृदय गति के रुकने से ७० वर्ष की आयु में २२-१०-२०१६ प्रातः काल ५ बजे निधन हो गया। आचार्य अर्जुनदेव वर्णी जी आचार्य बलदेव जी के गुरुकुल कालवा में प्रथम शिष्या स्नातक एवं आचार्य बलदेव जी के प्रथम मानस पुत्र के रुप में जाने जाते थे। उनका अंतिम संस्कार गुरुग्राम में पूर्ण वैदिक रीति से आचार्य सत्यजीत जी (अजमेर), आचार्य भद्रकाम वर्णी, आचार्य सत्यव्रत जी, आचार्य सत्येन्द्र प्रकाश, आचार्य शतक्रत जी, कन्हैयालाल आर्य के द्वारा वेदमन्त्रों से हुआ। उनका जाना आर्य जगत् की एक बहुत बड़ी अपूरणीय क्षति है। अभी हाल ही में डॉ. धर्मवीर जी के निधन से अपने आप को उबर नहीं पाया था, यह दूसरा व्रजघात आर्य जगत् को झकझोर गया। अन्त्येष्टि में रामलाल मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा भी शामिल हुए थे। आचार्य अर्जुनदेव वर्णी जी की श्रद्धाञ्जलि सभा दि. २५-१०-२०१६ को वैदिक कन्या उच्च. विद्यालय जैकमपुरा में विद्यालय के प्रधान चन्द्रप्रकाश गुप्ता जी के सौजन्य से सम्पन्न हुई। इस सभा में आर्यजगत् के वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी, आर्य नरेश जी, आचार्य ज्ञानेश्वर जी, आचार्य नन्द किशोर जी, आचार्य सत्येन्द्र प्रकाश सत्यम, श्री सज्जनसिंह आर्य, आचार्य रामबीर जी, आचार्य सर्वमित्र आर्य, श्री सत्यदेव शास्त्री, आचार्य शतक्रतु जी, श्री वीरेन्द्र शास्त्री, श्री रविकान्द राणा, आर्य अतुलानन्द बीकानेर, श्री चन्द्रप्रकाश गुप्ता, प्रभुदयाल चुटानी, धर्मेन्द्र बजाज, श्री किशनचन्द सैनी, श्री वेदभानु आर्य, श्री रामअवतार गोयल, श्री पद्मचन्द आर्य, श्री ईश्वर दाहिया, सहित हजारों लोगों ने भाग लिया। मंच का संचालन श्री कन्हैयालाल जी आर्य ने किया।

संवाददाता : श्री कन्हैयालाल जी आर्य हरयाणा

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्यों एवं अग्निदूत परिवार की ओर से परमेश प्रभु से प्रार्थना करते हैं शोक सन्तप्त परिवार को असहय वेदना सहने की शक्ति एवं दिवंगत आत्मा को श्रेष्ठ आश्रय प्रदान करें। – सम्पादक

ओ३म् नाम का बार-बार उच्चारण और ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव का चिंतन करना चाहिए।

आर्यसमाज टाण्डा का शताब्दोत्तर रजत जयन्ती समारोह सोल्लास सम्पन्न

नईदिल्ली। आर्यसमाज टाण्डा का शताब्दोत्तर (१२५वाँ वर्ष) के अवसर पर रजत जयन्ती समारोह दिनांक १० से १४ नवम्बर २०१६ तक स्थान मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज हॉल जनपद नगर में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर **दिनांक १० नवम्बर १६** को प्रातः ५.३० बजे से योग-प्राणायाम, सामवेदीय यज्ञ, भजन, उपदेश व ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उद्‌घाटन समारोह दोप. १ बजे से ४.०० बजे चला, जिसमें मुख्य अतिथि मान. राजनाथसिंह, गृहमंत्री भारत सरकार, अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, मान. श्री रामनाईक जी, महामहिम राज्यपाल उ.प्र., स्वागताध्यक्ष श्री दीनदयाल गुप्ता प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल कोलकाता मुख्य रुप से उपस्थित रहे। आर्ष सिद्धान्त सम्मेलन (सायं ६ बजे) जिसमें अध्यक्ष श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल गुजरात सहित अन्य गणमान्यजनों की उपस्थिति सम्पन्न हुआ। दिनांक ११ नवम्बर १६ को नारी सशक्तीकरण सम्मेलन, श्रेष्ठ पुरुषों एक हो (संगठनात्मक संगोष्ठी), पारितोषिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, वेद विज्ञान सम्मलेन, युवा जागृति सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए।

दिनांक १२ नवम्बर १६ को वेदप्रचार का स्वरुप (गोष्ठी), विशाल शोभायात्रा, कवि सम्मेलन, जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. प्रशस्य मित्र रायबरेली, श्री सज्जनसिंह कोठारी, मा. लोकायुक्त राजस्थान, कविगण में राष्ट्रकवि डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, दिल्ली सहित अन्य विद्वत् जन की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। **दिनांक १३ नम्वबर १६** को राष्ट्रीय चेतना तथा जागृति सम्मेलन, आर्य प्रतिनिधि प्रान्तीय सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, **गोरक्षा एवं संस्कृति सम्मेलन** जिसमें **सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य प्रधान छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा** मुख्य अतिथि के रुप में होकर सारगर्भित उद्‌बोधन हुआ साथ में श्री चतुर्भुज कुमार आर्य उपमंत्री सभा भी उपस्थित रहे। भजन व उपदेश का रंगारंग कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। **दिनांक १४ नवम्बर १६** को मेला प्रचार, बाल विकास कार्यक्रम प्रातःकालीन सत्र में सम्पन्न हुआ। समापन समारोह पूर्वाह्न ११ बजे मध्याह्न १ बजे तक हुआ, जिसमें स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, मुख्य अतिथि श्री रामसिंह पूर्व सांसद, आभार प्रस्तुति श्री रविन्द्र आर्य मंत्री सहित अन्य विद्वत् व आर्यनेताओं की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में आमंत्रित समस्त आर्यजनों को धन्यवाद ज्ञापन श्री आनन्द कुमार आर्य प्रधान ने किया। तत्पश्चात् शौर्य प्रदर्शन (आर्य वीरांगना दल टाण्डा द्वारा) सम्पन्न हुआ। **संवाददाता : कार्यक्रम से लौटकर सभा उपमंत्री श्री चतुर्भुज कुमार आर्य**

वानप्रस्थी राममुनि द्वारा कवर्धा जिला (कबीरधाम) के लगभग ५०० गांवों में सघन वेद प्रचार

कवर्धा। दिनांक २८ फरवरी २०१५ से २३ नवम्बर २०१६ तक पतञ्जलि योग शिक्षा समिति कवर्धा छ.ग. से पधारे वानप्रस्थी राममुनि (ग्राम लेंजाखार पोंड़ी) द्वारा महर्षि दयानन्द के मिशन एवं योग एवं जीवन निर्माण व नैतिक शिक्षा को जन-जन पहुंचाने के लिए कवर्धा (कबीरधाम) जिला के लगभग ५०० गांवों के विद्यालयों का सघन दौरा करते हुए विद्यालय के छात्र-छात्राओं को योग के नियम, आसन, प्राणायाम एवं अनुशासन की जानकारी बहुत अच्छे से दिया गया। स्वास्थ्य लाभ, दैनिक आचरण, व्यवहार आदि का सामंजस्य एवं उपयोगिता योग के माध्यम से बताया गया। इनके अलावा नैतिक शिक्षा से संबंधित विभिन्न प्रकार की ज्ञानवर्धक बातें बताया गया। सदाचार का पालन करने के लिए छात्र-छात्राओं को प्रेरित कियागया। बच्चों में देश निर्माण की भावना अलख जगाया गया। भारत को स्वच्छ बनाने के लिए संकल्पित किया गया। इससे सभी विद्यालय के छात्र-छात्राएँ लाभान्वित हुए। आगामी वेदप्रचार का कार्यक्रम दुर्ग जिला में प्रारंभ हो चुका है। **संवाददाता : वानप्रस्थी राममुनि आर्य**

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज धमतरी व
अग्निदेव आर्य प्राथमिक शाला एवं डी.ए.व्ही.
माध्य. विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में
133वाँ महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस
के अवसर पर आर्य समाज धमतरी के
पदाधिकारीगण व शिक्षिकाएँ

॥ ओ३म् ॥

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
आर्यसमाज टाटीबन्ध, महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय
रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में
महर्षि दयानन्द सेवाश्रम जी.ई. रोड, रायपुर में
श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह एवं आर्यसमाज टाटीबन्ध व
महर्षि दयानन्द आर्य. उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध का वार्षिकोत्सव

आमंत्रण

दिनांक 21, 22 एवं 23 दिसम्बर 2016
(बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार)

आमंत्रण

आमंत्रित विद्वान्

श्री जगमोहन आर्य व साथी
वैदिक भजन गायक
लैलूंगा (रायगढ़) छ.ग.
पं. नंदकुमार आर्य, रायपुर
भजनोपदेशक
आचार्य कर्मवीर शास्त्री,
सम्पादक, 'अग्निदूत' सभा मुख पत्र
आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री, रायपुर
आचार्य शिवशंकर शास्त्री, रायपुर
पं.संजय शास्त्री, रायपुर

यज्ञ के ब्रह्मा
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय
आर्य प्रतिनिधि सभा

कार्यक्रम

दिनांक 21 एवं 22 दिसम्बर 2016
प्रातः 8 से 11 बजे एवं
अपरान्ह 2 से 5 बजे
यज्ञ, भजन, प्रवचन

दिनांक 23 दिसम्बर 2016
प्रातः 8 से 11.30 बजे : यज्ञ, पूर्णाहुति
पूर्वान्ह 11.30 से 1.30 बजे तक - भजन, प्रवचन
अपरान्ह 1.30 बजे - ऋषि लंगर

निवेदक : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज टाटीबन्ध महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर

-: संपर्क सूत्र :-
दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री (मो. 9826363578), दिलीप आर्य कार्यालय मंत्री (मो. 9630801257),
सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव प्रधान आर्यसमाज टाटीबन्ध (मो. 9300487016), लोकनाथ आर्य प्रबंधक दयानन्द सेवाश्रम (मो. 8103895537)

www.thearyasamaj.org
CHH-HIN/2006/17407 दिसम्बर 2016 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग / 99/2015-17

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001